टीकाकार—भागीरथ स्वामी ।

* श्रीः *

रतिबल्लभः ।

अर्थात्

कुचोपनिषद्

आयुर्वेदमहामहोपाध्याय रसायनशास्त्र्यायुर्वेदाचार्य
भागीरथस्वामि कृत भागीरथी भाषा
टीका सहितः ।

प्रकाशकः—

श्रीबेङ्कटेश्वर प्रेस पुस्तक एजेन्सी

नं० १६५।२ हरिसन रोड, कलकत्ता ।

[प्रथमवार] सन् १६२८ [मूल्य १॥) सजिल्द २)

प्रकाशक—
श्रीनिवास, गिरधारीलाल लोहिया
"श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस पुस्तक एजेन्सी"
नं० १६५।२ हरिसन रोड, कलकत्ता।

मुद्रकः—
नूरमुहम्मद,
"सेण्ट्रल-न्यू-प्रेस"
१३४ बी० नार्थ लेएट्रल एभिन्यू रोड,
कलकत्ता।

भूमिका।

श्रुतिस्मृति पुराण इतिहास काव्यादिके देखनेसे पता चलता है कि तीनों वर्ण ऋषिकुलोंमें बासकर समस्त विद्याओंको सीखकर पूर्ण ब्रह्मचर्य्य समाप्तकर गृहस्थाश्रममें प्राप्त होते थे। उस समय उनको काम शास्त्रकी भी शिक्षा दी जाती थी। जिसको पढ़कर दारकर्ममें प्रवृत्त होना पड़ता था। बहुतसे ब्रह्मचारियोंने विवाह हो जानेपर तथा स्त्री पुरुष एक साथ रहिनेपर भी मैथुन कर्मको नहीं जाना। इस बातके लिये वेद पुराण काव्यसाक्षी है। उस समय उन्हको कामशात्रके द्वारा बताया गया था कि ग्रहस्थाश्रम में रहिनेवाले मनुष्योंके लिये विचित्र विचित्र सुरतोप चारोंके क्रीड़ा सुख भोगना गृहस्थाश्रमका प्रधान जन्म सुख है। अन्यथा नाना प्रकारके विचित्र सुरतोपचार शिक्षारहित पशुधर्मसे सैकड़ों सौरभेयी (गायों) के मध्यमें रहिनेवाला वृषभ भी तो सम्भोग सुखको प्राप्त होता है।—

नाना विचित्रैस्सुरतोप चारैः क्रीड़ासुखं जन्म फलन्नराणाम्।
किंसौरभेयीशत मध्यवर्ती वृषोऽपिसम्भोग सुखं नभुङ्क्ते॥

यह पशुधर्म है। इस प्रकार विना शिक्षाके मैथुन कर्ममें प्रवृत्त होने वाला मनुष्य पशुसंज्ञक कहिलाता है। जो मनुष्य गृहस्थ धर्ममें रहकर कृपालु होता हुवा कामशात्रका ज्ञाता बनकर नित

स्त्रिनियोंके मदनसे उत्पन्न हुवे ज्वरकी पीड़ाको शमन करता है वह स्वर्गसुखको प्राप्त होता है। वह धीर और वशी कहाता है।

"हित्वात्म कामं शमयेद्वशीयो
नितम्बिनीनां मदन ज्यरार्तिम्
कृपाम्वितो ममन्थ शास्त्रवेदी
समाप्नुयात्स्वग सुखं सधीरः"

महेश्वरा चार्य कहते है कि जो गृहस्थ पुरुष अपने अन्य ठलुवे कामको परित्यागकर काम रोगकी पीड़ासे दुःखित (स्त्री) की नित्य चिकित्सा करता है। वह कामिक पदको प्राप्त होता है वह कामी कहाता हैं।

"कामंत्यक्त्वात्मनःकामी
काम व्याधिनि पीड़िताम्
चिकित्सयति योनित्यम्
पदंप्राप्तोति कामिकम्।"

इस काम शास्त्रके ज्ञानसे यत्न पूर्वक श्रद्धासे कामको साधन करनेवाले जिन गृहस्थी पुरुषोंने जबतक गृहस्थमें रहकर कामी बननेका अपना सिद्धान्त स्थिर किया है। तबतक उन्हके धन धान्य लाभ पुत्र पौत्र सानन्द स्थिर रहेंगे। और कभी क्लेशको नहीं प्राप्त हो सकते। इसलिये काम शात्रको अवश्य अध्ययन करना चाहिये।

"ज्ञानेऽस्य शास्त्रस्य कृताशयानां
तिष्ठन्तुतावद्धनधान्य लाभाः
सुतार्थिनां नापि सुतादुरापाः
श्रद्धावतां साधयतां प्रयत्नात्"

गृहस्थ धर्ममें रहकर कामशास्त्रको विना जाने स्त्री पुरुषोंमें प्रेम नहीं रह सकता। और कामा तुरा स्त्री या कामा तुर पुरुषके विना कहे और उसको पूर्ण किये विना अनेक प्रकारकी विपत्तियां आ सकती है। इसके पूर्ण ज्ञानसे अनेक प्रकारके सुख भी प्राप्त हो सकते हैं। विना कहे केवल काम चेष्टाको जानकर जब कामसे पीड़ित स्त्रीके वराङ्ग देशमें काम शास्त्रमें कहे हुवे उपदेश क्रमसे मनुष्य वीर्य्य स्थापन कर दे वे तो वह स्त्री उस अपने स्वामीके लिये द्रव्य सहित अपने शरीरका सर्वस्व समर्पण कर देती है।

"यथोपदेशेन वराङ्गदेशे
वीजस्य विन्यास वशेननारी
सङ्कल्प जव्याधि निपीड़िताङ्गी
सङ्कल्पयेत् सद्रविणं शरीरम्

प्राणियोंके हित साधन करनेवाले धर्म-अर्थ-काम मोक्षके लिये यह शास्त्र वनाये गये हैं। समयानुसार इनकी शिक्षासे कार्य्य लेना चाहिये। इसलिये पूर्व कामशास्त्रको पढ़कर गृहस्थाश्रमके सुखको भोगना चाहिये। इसके अध्ययनसे पुरुषोंकी तथा

स्त्रियोंकी बुद्धिका ज्ञान कामकी ६४ कलाओंका ज्ञान यौवन

कापरिज्ञान और कर्तव्यता। पुरुष और स्त्रियोंकी जातिके भेद। सौन्दर्य्यता—स्त्री पुरुषोंकी नाना प्रकारकी विद्या-अभिमान स्त्री तथा पुरुषोंकी दुर्लभ्यता-आभरण—माला-वस्त्र-सुगन्ध वास-गृह -अनेक वाद्यादि युक्ति-धूप-अट्टालिका दिस्वरूप (सजे हुवे कमरे) नाना प्रकारके भाव जनक चित्र, बिछोना-खाट-चकवा-मैना सूक आदि पक्षियोंको पालकर अपनी शिक्षासे काम लेना। स्त्री पुरुषोंके लिये कौनसी मणियां सुख देनेवाली है कौनसी मणियोंके धारण करनेसे दुःख होता है। इत्यादि अनेक प्रकारका ज्ञान प्राप्त होता है। इसका भाव यह है कि अनेक मणियोंमें गुण और दोष होते हैं। उन दोषोंके ज्ञानके विना धारण करनेसे वन्धन अनेक चिन्ता-रोग-वन्धु धन-प्रतिष्ठा गृहकी हानि होती हैं। जिन हीरोंमें सुन्दर तेज-गुरुता कान्ति-स्निग्धता-स्थूलता-शृंगोंकी समानता-निर्मलता होती है वह सुखके दाता है। जिन हीरोंमें जलके बुद्बुदोंकी भांति रेखा हो, नाना प्रकारके रंगोंके चिन्ह हो मलिन हों कौवेके पैरके समान चिन्ह युक्त हलकापन हो वह खराब है गृहस्थके योग्य नहीं। सुन्दर जाति वाले रत्नोंको घरमें रखनेसे वृद्धि होती हैं। विजातीय रत्नोंसे सब प्रकारका विनाश होता है। रत्न शास्त्रमें लिखा है।

"गुणवद्रुण सम्पदांप्रसूति
विपरीतं व्यसनोदय स्यहेतुः"

यह भी कामशास्त्रके अन्तर्गत आ जाता है नाना प्रकारके

कपड़े आदिमें मनोहर सुगन्ध ऐसी दी जाती है कि जिसकी गन्ध कामुकोंके मनको हरण करने वाली होती हैं। हमारे यहां लोकेश्वर का लिखा हुआ सुगन्ध शास्त्र भिन्न है। जिसमें असंख्य प्रकारके सुगन्धित वर्षों तक कभी सुगन्ध नष्ट न होनेवाले विचित्र २ सुगन्धोंका वर्णन किया है। जिनसे वाल-(कच) गृह-(घर) वस्त्र-सुत्र पीनेका जल-सुपारी-पान-पनीय जल-उद्वर्तन (उवटन) धूम वर्ती आदिका परिज्ञान साधारण वात है।

कामुकके लिये कामशास्त्रमें सांकेतिक शास्त्रका भी वर्णन किया है। जिसका परिज्ञानभी जरूरी है। हजारों सन्मानोंको प्राप्त होनेवाले युवा वस्था सम्पन्न सज्जनोंकी स्त्रियां संकेत कर सल्लाप करती हैं। उसके परिज्ञानके विना स्त्रियां लम्बा चौड़ा मृत्यु समान धिक्कार देती हैं। जैसे—पुरुषके प्रश्नमें फल स्त्रियोंके प्रश्नमें पुष्प-कुलके प्रश्नमें अङ्कुर देती है। या इस प्रकारका पानका वीड़ा वनाकर भेजती है। उसके उत्तरमें प्रसन्नताकी सूचनामें कानमें स्पर्श करना। यदि अपनी स्त्रीसे मिलना चाहता हो तो शिरके वालोंपर हाथ लगादेवे। यदि स्नेह दिख लाना होय तो अपनी छातीपर हाथ लगादेवे। यदि पूजन करना होय तो मस्तक-के आगेकी तरफ (ललाट) में हाथ लगालेना चाहिये। इस परि-ज्ञानके विना स्त्रियां वाणरूपी वाक्योंका प्रहार करती हैं। किसी कविने कहा है—

“ततो, न्यचिन्तां परिहृत्यकामी
यतेत सङ्केतक शास्त्रकेषु

सतांहि सम्मान सहस्रभाजां
यूनांवधूधिक्कृतिरेवमृत्युः।"

इस प्रकार भाषा संकेतवाक्यसंकेत, अङ्गसंकेत, पोटली संकेत वस्त्र संकेत ताम्बूल वीटिका (वीड़ी) संकेत पुष्प, पुष्पमाला संकेतोंका वर्णन किया गया है। इस शास्त्रको जानने वाली स्त्री किसीसे कभी धोखा नहीं खा सकती। इसी प्रकार पुरुष भी कभी धोखा नहीं खा सकता यदि मूर्ख हो तो अवश्य स्त्रियोंमें धिक्कारका पात्र बन सकता है।

यद्पिन सुलभेह साम्रृगाक्षी
सकलकला कलनासु पण्डिताया
तदपि निरवशेष कामशास्त्रा
भिहितपदेषु निवर्द्धयेत् (सा,")
"कथमपि यदि सङ्गमस्तयोस्याद्
ब्रजति तदाहि पराभवं बराकः
अविदित युवती कृतैकसङ्गे
तकइनि रत्नकुमारको यथैव"

यद्यपि समस्त कामशास्त्रकी कलाओंको जाननेके कारण वह मृगाक्षी सुलभा नहीं, तौभी समस्त कामशास्त्रमें विहित विषयोंमें बुद्धिको अवश्य परिवर्द्धित कर ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

यदि दैवयोगसे कभी बात चीतका समय आय जावे तो वराक

लज्जाको प्राप्त होता है। जैसे संकेत शास्त्रसे अनभिज्ञ कोई रत्न कुमार नामक पुरुष पराभवको प्राप्त हुआ था।

यह बात अवश्य ज्ञातव्य है, जिस स्त्रीका स्वामी अशक्त (शक्ति-रहित) कोमल ह्रस्वइन्द्रिय वाला शीघ्र च्युत होनेवाला हो। और स्त्रीका द्रव होना अति कठिन हो। वहां उस पुरुषको नीच शृङ्गार का कारण होकर लज्जित होना पड़ता है। उस अवस्थामें नीचरतसे उद्विग्न होकर स्त्रियां अपने स्वामियोंको नष्ट कर देती है। यह बात कर्णाटक देशमें अधिक सुनी जाती है।

"मदुह्रस्वध्वजोयत्र प्रियोऽशक्तो द्रुतच्युतिः।
तत्रस्त्रियश्च काठिन्यान्सतुनी चरतोद्भवः
नारीनीच रतोद्विग्ना स्वामिनं नाशयत्यपि
श्रूयतेचैव कर्णाटे कान्तया निहितःपतिः"

इसलिये मृदु साधनतादिकोंके शमनके लिये स्त्री पुरुषोंमें पर-स्पर स्नेहकी वृद्धिके लिये ध्वजाका दृढी करण, स्थूली करण, वली करण, शुक्रस्तम्भन, योनिद्रावण, पुरुष वशीकरण, स्त्री वशीकरण, यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र युक्त कामशास्त्रमें वर्णन किया है। इसी प्रकार स्त्रियोंका शुद्ध अशुद्ध सङ्कीर्ण नामसे तीन प्रकारके भावका वर्णन किया गया है। शुद्ध हावका भी मन्द और तीक्ष्ण तीक्ष्णतर भेदसे तीन प्रकारका वर्णन किया गया है।

शृङ्गारके भावोंसे उत्पन्न हेला १ विच्छित्ति २ विब्बोक ३ किल-किञ्चित ४ विभ्रम ५ लीला ६ विलास ७ हाव ८ विक्षेप ९ विकृत

१० मद ११ मोट्टायित १२ कुट्टमित १३ मौग्ध्य १४ तपन १५ ललित १६ यह षोडश चेष्टा होती है।

और षडंगुल ध्वजा वाला पुरुष शश, नवाङ्गुल ध्वजयुक्त वृषभ द्वादशाङ्गुल ध्वज युक्त अश्व कहाता है। इसी प्रकार शोभायुक्त गमन करनेवाली पतले शरीरवाली चन्द्रमाके समान शीतल स्वभाव वाली मन्द हसन मन्द आलापयुक्त अतिजघन केशवाली स्वल्प आहार करनेवाली चिकने मुखवाली हरिणी संज्ञक स्त्री होती है।

जिसके मोटे कठिन कुचहों—गर्म शरीरवाली मोटे जिसके हस्तपादहों गौरांगी मांसके समान जिसके रति जलमें गन्ध आवे छोटे पेटवाली समान अंगवाली अधिक पित्तवाली तरणीसंज्ञा-वाली स्त्री कहाती है।

अत्यन्त रोमोंसे आकीर्ण भगवाली और स्थूल नील केशयुक्त छोटी और मोटी हो। प्रकटित दांतवाली लाल रंगवाली वात प्रकृति, विशिष्ट सुन्दर शरीरवाली शीतोष्ण अंगवाली अधिक बोलने वाली चंचल हस्तिकेमदके समान गन्धवाली—हस्तिनी स्त्री होती है। इसी प्रकार अनेक अश्वपुरुष लक्षणों युक्त ह्रस्वेन्द्रियसे अनेकों-को तृप्तकरनेवाला शशक होता है। उसी प्रकार दोदोके लक्षणयुक्त होनेसे द्विलिंगिनी स्त्रियां तथा द्विलिंगी पुरुष कहाते हैं। इसी प्रकार हरिणी और शशके योगमें वड़वा वृषके योगमें अश्वहस्तिनी योगमें समरत होता है। हरिणी वृषको वड़वा हयके योगको उच्च सुरत कहते हैं। अश्व हरिणीका अत्युच्च सुरत कहाता है। शशकरिणीका नीचरत कहाता हैं। इस प्रकार नव प्रकारके रतमें

समरत उत्तम है। कामसे ग्रस्त स्त्री पुरुषोंके–अभिलाष–चिन्ता अनुस्मृति (स्मर्ण) गुणकीर्तन-उद्वेग-विलाप-उन्माद-व्याधि-जड़ता-मरण यह दश अवस्था होती है। नीचरतिमें भीतर ध्वजाका स्पर्शा भाव होनेके कारण स्त्रियोंके अधिक कण्डू उठती है उसका वारण न होनेसे स्त्रियां अनर्थ कर डालती है और भ्रष्ट होती हैं। उच्चरतमें कोमल गुप्त स्थानमें अधिक पीड़ा होती है। इसलिये यह भी उत्तम नहीं। इससे रोगादिके होनेकी सम्भावना है। परन्तु समरतमें किसी प्रकार कादुःखनही होता। कामशास्त्रके आचार्य्य लोग रजमें-उत्तम मध्यम-निकृष्ट वलधारीकृमि मानते हैं। वह कृमी स्त्रियोंके काम मन्दिरमें मृदु-वल वलवाले थोड़ी काम कण्डूति, (खाज) मध्य बलवाले मध्यम खाज, उत्तम शक्ति वाले विशेष खाज ये पैदा करते हैं। इसलिये स्त्री अपनी खाजके दूर करनेमें समर्थ अपते प्रांणेश्वरको क्षणभर भी छोड़नेके लिये समर्थ नहीं होती है। दैव योगसे यदि किसी प्रकार विच्छेद हो जावे तो दशमी अवस्थाको प्राप्त हो जाती हैं।

"मृदुमध्योत्तम शक्तय स्सूक्ष्मारक्तजा-क्रिमयः।
स्मरसद्मसकण्डूतिं जनयन्ति यथावलं स्त्रीणाम्॥"
"कण्डूत्य पनयनपटोः कान्ताच्युतिशर्म हेतुभूतस्य।
प्राणेश्वर स्यदायिता सहते नमुहूर्त विच्छेदम्॥"
दैवेनयदिक दाचित्कथमपि जायतेतस्यविच्छेदः।
सहसैवसा वराकी यायाद्दशमीमनो भवास्थाम्।

कामशास्त्रके ज्ञाता लोग स्त्रियोंके लक्षणोंको देखकर साध्यता असाध्यता यत्न साध्यता मालूम कर स्त्रियोंकी उत्तमता मध्यता नीचताका परिज्ञान हो जाता है। वाहुमूल (कन्धा) कोख, पेट, कुच, दिखाना वालकोंका चुम्बन आलिङ्गन, जरा जरा देखकर फिर मुखका वन्ध कर लेना। अपने वस्त्रोंको वार वार देखना आंसू वहाना, वार वार अङ्गुलियोंका मर्दन करना, वार पार खासना अपने स्वामीका गुणानुवाद करना, जृम्भा (जमुहाई उवासी) लेना कानोंमें वार वार उंगली डालना मदु वचन बोलना सहसा न वोलना आदि लक्षण अल्पयत्नसाध्य अर्थात् थोड़ेसे यत्नसे साध्य होनेवाली स्त्रियोंके हैं। रोगी ईर्षा रखनेवाले पराई चुगली करनेवाले वदमास धनहीन परदेशी कृपण दुराचारी प्रति समय क्लेश करनेवाले नपुंसक वृद्ध चोरोंकी स्त्रियां शीघ्र प्राप्त होती हैं।

जो स्त्रियां लज्जा रखती हैं जिनको घरवालोंका-धर्मका वद-नामीका पापका शास्त्रका भय रहता है-दुःख युक्त लोभ रहित स्त्रियां अप्राप्य हैं, अर्थात् वह नहीं प्राप्त हो सकती है। इसलिये जार कर्म विशारद पापी पुरुष धोबिन, मालिन, धाय, योगिनी, झाड़ फूक दवा आदि काम करनेवाली सखी, नौकरनी, नाइन आदि प्रगल्म युवती बात चीतमें चतुर दूतियोंके द्वारा स्त्रियोंको हानि बताकर स्त्रियोंको वहकाकर घरसे याहर निकालकर अपने बशमें कर समस्त धन नष्ट कर दोनों दीनसे खो देते हैं। इसलिये काम शास्त्रको अध्ययन कर स्त्रियोंको हुशियार रहना चाहिये

आज कल बहुतसी स्त्रियां तो इस बातसे जारणी बन जाती हैं वह स्वयं सर्वसत्व गुण सम्पन्न है परन्तु उनके स्वामी लड़कोंपर तथा वेस्या या अन्य जारिणी स्त्रियोंपर मुग्ध रहते हैं। अपनी स्त्रियोंसे नाम मात्र भी नहीं बोलते हैं। उनकी गति उत्तम वस्तुवोंको परित्याग कर विष्ठा मुख देनेवाले काककी भांति हो जाती हैं। इसलिये उनकी स्त्रियां विवश हो दुराचारिणी-वेस्या वनती हैं।

इसलिये अपनी घरकी स्त्रियोंसे प्रेम रखकर मधुर भाषणकर रक्षा करना चाहिये। यदि इस प्रकारका अनुचित सम्बन्ध स्वामी तथा स्त्रियोंका होता है तो स्त्री और पुरुष दोनोंही नष्ट हो सकते हैं। बदमास (जार लोग) बागोंमें तीर्थोंमें थियेटरों तमासोंमें विवाहों पर्वोंमें-मेलोंमें-अपने दोस्तोंके दोस्त गृहोंमें घूमकर कामकर खुसामद कर-परिश्रम कर अपने द्वारा या अपनी दूतियोंके द्वारा स्त्रियोंको बिगाड़ कर फुसला कर धर्म च्युतकर उड़ा लेजाते है। इसलिये ऐसे स्थानोंमें किसीका सहसा भरोसा नहीं करना चाहिये। और अपनी स्त्रियोंकी पूर्णतया रक्षा करना चाहिये। जो स्त्रियां स्वयं विज्ञान युक्ता है, जिसका स्वामीसे सेव्यसेवक भावपूर्ण है वह निस्सन्देह सती और पूज्य होती है उन्हकी तरफको दुष्टकी दृष्टि भी नहीं पड़ सकती है।

सप्रेमदानैर्मधुरै र्वचोभिस्संरक्षितव्यास्सततंयुवत्यः अरक्षिता ह्यात्मपति त्रिवर्गनाशङ्करोत्यन्य जनानुरागात् ॥

उद्यान तीर्थनटयुद्धमहोत्सवेषु
यात्रादिदेवकुलबन्धु निकेतनेषु
क्षेत्रेष्वशिष्ठ युवतीरतिसङ्गमेषु
नित्यंसतास्व वनिता परिरक्षणीया
तारुण्य मोहमदन स्वजनोपरोधैधर्मार्थकाम
कुतुकोत्सुकसुप्रभावैः
दूत्याभि नन्दित विचित्र रताश्रयेण
नार्य्योभवन्त्य गणिताय्र्यकु लोपचाराः
चेष्टाम्विचार्य्य निभृतं निजसुन्द
रीणां रूपोत्तमान्य नर लोचन गोचरेषु
यस्यान सन्तिसुतसंक थितेङ्गितानि
कान्तासु सैव गृहणी बहुमाननीया

मनुष्यको वसन्तादि ऋतुओंके भोग विभागोंको समझ कर स्त्रियोंका सेवन करना चाहिये। निदाघ (गरमीमें) और शरदमें वाला (षोडश वर्ष वाली) हेमन्त शिशिरमें तरुणी (१७ से ३० वर्ष वाली) वर्षा और वसन्तमें प्रौढ़ा (३१ से ५० तक) को सेवन करना चाहिये। इसका कारण यह है कि बालासे बलकी बृद्धि, तरुणीसे बलक्षय होता है। प्रोढ़ा स्त्रीसे वुढ़ापा आता है। स्त्रियोंकी मदा वह २४ नाड़ियां होती है उन सबका

नासिका कार मुख वाला प्रधान (मदन छत्र) होता है। जिन नाड़ियोंके नाम और स्थान निम्न लिखित हैं। नेत्रोंमें २ मुखमें इधर उधर २। मुखमें १। दोनों करोंके अंगुष्ट मूलोंमें २। पादाङ्गुष्ठ मूलोंमें २ कानोंमें २ छातियोंमें २। पसलियोंमें २ त्रिकमें (कटिमें) २ मस्तकमें २ नासामें २ हनुमें १ हृदयमें (एवं सब २४) स्थान हैं।

स्त्रियोंके भगके भीतर छै मद नाड़ियां होती है जिनमें सबसे प्रथम भगमें बायीं तरफ सती नाड़िका, दक्षिण ओर असती नाड़िका, कुछ भीतरकी तरफ, वाम तरफ सुभगा दक्षिण ओर दुर्भगा नाड़ी होती है। उसके थोड़े नीचे बांईतरफ पुत्री नाड़िका, दक्षिण और दुहित्रिणी नाड़ी होती हैं। एक बात यहां निषेध है कि सतीको छेड़नेसे असती असतीको छेड़नेमें सती कुपित होती हैं। परन्तु यहां तो सतीको छेड़नेसे असती और असतीके स्पर्शसे सती प्रसन्न होती है।

कृष्णपक्षमें	शुक्लपक्षमें
दक्षिणाङ्गके क्रमसे	बामाङ्गके क्रमसे
कामका वास होता है	कामका वास होता है
तिथि—	तिथि---
प्रतिपदाको दक्षिणाग्र भागके	
अंगुष्ठमूलमें	१ को वाम चरणाग्र भागमें
द्वितीयाको दक्षिण जंघामें	२ को वाम जंघामें
तृतीयाको दक्षिण छातीमें	३ को वाम छातीमें

चतुर्थीको दक्षिणयोनिमें	४ को योनिमें
पञ्चमीको नाभिमें	५ को नाभिमें
षष्ठीको दक्षिणकुक्षिमें	६ को कुक्षिमें
सप्तमीको दक्षिण कुचमें	७ को कुचमें
अष्टमीको दक्षिण हथेलीमें	८ को हथेलीमें
नवमीको गलमें	९ को गलमें
दशमीको ओष्टमें	१० को ओठमें
एकादशीको कपालमें	११ को कपालमें
द्वादशीको नेत्रोंमें	१२ को नेत्रोंमें
त्रयोदशीको कानमें	१३ को कानमें
चतुर्दशीको शिरमें	१४ को शिरमें
अमावसको सर्वाङ्गमें	१५ को सर्वांगमें
कामका वास होता है	कामका वास होता है

एक मतसे कृष्णपक्षमें पैरोंके अंगुष्ट मूलसे शिखा मूलतक शुक्लपक्षमें शिरसे चरण तक कामका वास तिथि क्रमसे समझना चाहिये। हरिहर आचार्य्यने शृंगारदीपिकामें शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष विलक्षण लिखा है। रजो दर्शनके दिनसे १५ दिन तक शुक्लपक्ष होता है। पीछे १६ दिनसे ३० दिन तक कृष्णपक्ष होता है। यह नियम सर्वसाधारण स्त्रियोंके लिये है। पद्मिन्यादिकोंका अनंग रंग और पञ्चसायकमें विशेष लिखा है। दोनों अंगुष्ट मूलोंमें अ, दोनों जंघाओंमें आ, दोनों उरोंमें उ, कुक्षितटमें ऊ, दोनों कुचोंमें ऋ, दोनों हाथोंमें ॠ, कण्ठदेशमें ऌ, अधरोष्ठमें ॡ, कपालमें ए,

नेत्रोंमें ऐ, कर्णमें ओ, शिखामें औ, सर्वांग देशमें मदनवीजक्लीं, विन्दुसंयुक्त अं, इत्यादि मानसिक तान्त्रिक स्त्रीमें स्थापन कर वशीकरण प्रयोग होता है। और इस प्रकार चिन्तित मात्रसे विना योनि और शिष्णके दोनोंकी तृप्ति हो सकती है।

महेश्वरः--इति चिन्तित मात्रेण स्त्रीणां तृप्तिः प्रजायते विना-स्त्रीयोनिर्लिंगाभ्यां संसारेच वरानने।

परन्तु इसका फल भिन्न भिन्न होता है। जैसे—शुभगा नाड़ीके स्पर्शसे शुभगा दुर्भगा, नाड़ीके स्पर्शसे स्त्री दुर्भगा-कुटिलाके स्पर्शसे कुटिला, वृद्धाके स्पर्शसे वृद्धा-पुत्रिणीके स्पर्शसे पुत्रवती-दुहितृनाड़ीके स्पर्शसे दुहितृवती होती है। किसी आचार्य्य का यह भी मत है कि-कुचोंमें सती नाड़ी-कक्षमें असती नाड़ी ओष्ठोमें शुभगा-त्रिकमें दुर्भगा सुंड दण्डमें पुत्रिणी नितम्बोंमें दुहित्रिणी नाड़ी रहिती है।

एवंसंचोदितानारी नान्यमिच्छति मानवम्।
क्लीवोऽपिह्वदयं सर्वं प्राप्नोत्येवंनसंशयः॥

देस भेदसे स्त्रियोंका वोध होना भी जरूरी है। जैसे—मध्य देशकी स्त्रियां प्रहर्षण और चुम्बनसे रागवती कोमल क्रीड़ायुक्त सुचरित्रवती होती हैं। लाट देशकी स्त्रियां प्रहार और चुम्बन से प्रसन्न होती हैं। पश्चिम देशकी वाणीसे प्रसन्न होती हैं, और सुचरित्रा होती हैं। सिन्ध देशकी स्त्रायां पशुसम रतिसे प्रसन्न होनेवाली—नखदन्तक्षतसे प्रसन्न होनेवाली कोमल स्वभाव और

वाणीयुक्त-मिष्टान्न भोजनसे प्रसन्न होनेवाली होती है। सिंहल द्वीपवाली विविध रतिसे खुश होनेवाली ६४ कलाओंमे निपुण होती हैं। काश्मीरकी स्त्रियां नितम्ववती सुगन्धयुक्ता शुचि स्वभाववती होती हैं। जालन्धरकी कृतविधान साध्य आचार विचार हीना होती हैं। स्त्री राज्योंकी स्त्रियां और कौशल देशकी स्त्रियां आलिंगन और चित्ररतमें अनुरक्त रहती हैं। और वेगविशिष्टा-कृत्रिम लिंगसाध्या चुम्वना भिलाषिणी होती हैं। कर्णाट देशकी प्रचण्ड वेगवती कृतघात गंडा (बात करते ही थप्पड़ मारनेवाली) उन्मत्त इन्द्रिय पानमें फँसनेवाली कण्डुली और कृत्रिमलिंग साध्या होती है-। महाराष्ट्रकी पवित्रा चवसठकला सम्पन्न आलिंगन और चुम्वनसे प्रसन्न रहनेवाली-कराङ्गु लिक्षेपण विधिसे साध्या होती हैं। द्रविड देशवाली आलिंगन-चुम्वनसे प्रसन्न तथा जिह्वा प्रदेशसे भूषणोंसे ताड़नसे मर्दनसे प्रसन्नरहनेवाली। गौड़ देश वंगालकी छोटी कुचवाली स्यामा-चुम्वना लिंगनादिमें रसिकोंके चितको चुरानेवाली अत्यन्त लावण्य देहवाली सुख साध्या कोमलमंद विद्यायुक्त वाणी बोलने वाली तीर्थ यात्रासे प्रसन्न रहने वाली। नैयपाल-काम रूप (चीन) की स्त्रियां आघात मर्दन नखदन्ताघातसे प्रसन्न रहनेवाली नाना क्रीड़ाकला सम्पन्ना-दूरसे युवाको प्रसन्न करने वाली मन्दवेगा होती हैं गुजरातकी कृशाङ्गी पीनस्तनी चारु-लोचना-वाह्याभ्यान्तरसे प्रसन्न रहनेवाली भक्तरसिका अनेक शृंगार वती होती हैं। आन्ध्र देशकी प्रेमनिवन्ध निपुणा-पवित्रतायुक्त सर्व गुणा नुरागिणी होती हैं। कर्णाटक देशकी स्त्रियां विशेष

सुरतो पचारवाली होती हैं। इस प्रकार अनेक प्रकारकी स्त्रियां होती हैं।

सुरतोपचारमें चुम्बन भी प्रधान अंग हैं। वह शब्द युक्त चुम्बन, स्तनित, कूजित, श्वसित, सीत्कार, पूत्कार, हिक्कृत, दूत्कृत नामसे ७ प्रकारका वर्णन किया गया है। इसी प्रकार नखपद–उच्छुरित, अर्द्ध चन्द्र, मण्डलक, व्याघ्रपद रेखा, शशप्लुत–उत्पलपत्र, मयूरपद नामसे भी पदनख आठ प्रकारका है। इसी प्रकार दशनपद, गूढक, उच्छूनक, प्रवालमणि, विन्दुमणि माला, विन्दुमाला गण्डक (खण्डकाभ्र) नामसे दशनपद आठ प्रकार हैं।

कुचादिको हाथसे दबानेपर जो चिन्ह पड़ जाते हैं उसको नखपद कहते हैं। दांत और ओष्ठके लगनेसे जो चिन्ह हो जाते हैं उसको दशनपद कहते हैं।

आलिंगन भी लतावेष्टित, वृक्षाधिरूढ़, स्पृष्टक, पीड़ित, तिल तण्डुल, दुग्धजल, जघनोपगूढ़, कुचोपगूढ़, उरूपगूढ़, लालाटिक भेदसे दश प्रकारका है। निश्शब्द और सशब्द, नामसे चुम्बन दो प्रकारका है। सशब्द चुम्बनकी गणना पूर्व वर्णन की गयी है। वह भी सात प्रकारका है। इसी प्रकार निपीड़ित भ्रामित, उन्नामितक स्फुरित संहतोष्ठ वैकृतक, नतगण्ड नामसे निश्शब्द (शब्द रहित) चुम्बन भी सात प्रकारका है। सूची, प्रतता, करी, नामसे जिह्वा प्रवेश तीन प्रकारका है। यह भी चुम्बनकाही अंग है। और ओष्ठविमृष्टक, आर्द्र चुम्बित, सम्पुटक नामसे चार प्रकारका चूषण हैं। रति शास्त्रमें शयन करनेकी भी विधि हैं।

जिसमें उत्तानकरण–स्वस्तिक, माण्डूक, कौर्म–हनुपाद, पद्मासन, अर्द्धपद्मासन, पिण्डित, अर्द्धपिण्डित, ज्रम्भित, वेणुविदारण, इन्द्राणी प्रसारित, सूची, नागरक ग्रास्य, कार्कट, प्रेङ्खण मार्कटक, उद्‌भुग्न, आयत, नागपाश, नामसे २४ प्रकारका है। इस प्रकार पार्श्वकरण (पसवाड़ा) लेकर सोना भी सम्पुटक पीड़ितक, मुद्रक, परोव्रतक, वेष्टितक वाड़तक युग्मपाद सात प्रकारका है।

आसीन और ललित नामसे, आसीन करण दो प्रकारका है पशुकरण-व्याघ्रस्कंद नामसे अधोमुख करण भी दो प्रकारका है। हरिविक्रम, व्यापर (व्यायत) अर्पित, दोलाविलम्बित। (अव-लम्बित) कूर्परजानु नामसे उत्थित करण भी सात प्रकारका है। शब्दकर्तन, मुष्टि, विद्धक नामसे, ताडन तीन प्रकारका है। आदीपित, स्पृष्टक-कम्पित समाक्रम भेदसे चार प्रकारका मर्दन है। वद्धमुष्टि-वेष्टितक, कृतग्रथिक समाकृष्ठि नामसे चार प्रकार का ग्रहणक शास्त्रमें प्रतिपादन किया गया है। करण, कनक, विकनक पताका त्रिशूल, शनियोग नामसे छै प्रकारका अङ्गुलि प्रवेश वर्णन चिया है। पतिको प्रसन्न करनेका उपक्रम करना, कुछ गुप्त हास्य पूर्वक पूर्वाचरित प्रकट करना मध्याचरित अन्त्याचरित प्रकटकर स्वामीकी भक्ति अपनेमें लोभ भावसे प्रकट कर अपना सर्वस्व स्वामीके समर्पण रखना, छायाकी भांति स्वामी के पीछे चलना, सर्वदा प्रिय और प्रियाका अटल प्रेम रहे—सम्पूर्ण आचार विचार सर्वदा स्थिर रहे, एक दूसरेकी स्त्रीको या स्त्री दूसरे पुरुषको कभी ग्रहण करनेकी इच्छा न करे जारकर्मरत

पुरुष स्त्रियोंके स्वभावका तथा उन्हके कर्तव्यका पूर्ण पता लग जावे। पापी मनुष्योंके जालमें कभी कोई फस न जावे बुद्धि भ्रष्ट न हो जावे—दुष्ट कुटिनी नायिका-दूतिका तथा बुद्धि भ्रष्ट करनेवाले यन्त्र-मन्त्र तन्त्रोंका पता लग जावे। जिससे किसी प्रकारका कुमार्गपथमें पैर न पड़ने पावे, और प्राप्त रोगोंके कष्टोंको दूर कर सके। स्त्री पुरुषोंके सुख सम्भोग नाशक कारणोंका ज्ञान कर उसके उपाय कर परस्पर प्रेम वर्द्धन करना, पुत्रादि*को प्राप्त कर उनके लालन पालनमें समर्थ हो भगवद्भजन पूर्वक जीवन व्यतीत कर भगवानकी शरणमें प्राप्त होना ही काम शास्त्रकी रचना करणका सिद्धान्त है।

आज कल काम शास्त्रकी असली पुस्तकोंका पठन पाठन वन्ध सा हो गया है। इसका कारण एक तो यह है कि लोग मूर्ख अधिक हैं इसलिये संस्कृत भाषा होनेके कारण समझ नहीं सकते। द्वितीय वात यह हैं कि कुछ बदमासोंने यह बात प्रसिद्ध कर रक्खी है कि चौराशी आसनयुक्त कामशास्त्र नहीं मिलता है। इसलिये ८४ आसनोंकी तसवीर वनाकर २००) ४००) ६००) १००० तकमें बेचकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। जिनको देखनेसे मालूम पड़ता है सिवाय नुकसानके और रोगादि उत्पन्न होनेके दूसरी बात सिद्ध नहीं होती है। क्योंकि शास्त्रमें जो ८४ आसनों का विधान है वह यह आसन नहीं है उनका बनाना और प्रयोग करना अति कठिन है। चित्रोंकी पूर्ति इस प्रकारकी गयी है। कि

---

* यदि गर्भधारणकी इच्छा होय तो ९ दिन हमारी गर्भदा दवाई खाइये। जरूर गर्भ रहेगा। प्रथम एक पसा देनेकी जरूरत नहीं।

यदि सामने धरकर समस्त चित्र आपसमें मिलाये जावें तो प्रायः बहुत सी तसवीरें एक सी होना सिद्ध होता है। कुछ आदमियोंने लोभ बिवश ८४ आसनोंकी तसवीरें भी छाप दी हैं। वह सिवाय ठगनेके और दूसरी वात नहीं हैं। क्योंकि वह कामशास्त्रसे बिलकुल भिन्न है। और उन पुस्तकोंसे उच्चशिक्षा प्राप्त होना कठिन हैं। कुछ ऐसी पुस्तकें इधर उधर निराधारकी झूठी कल्पनाओंसे कल्पित कर लोगोंने बनाड़ाली है और नाम महालक्ष्मीके पत्र, आनन्दकी रात्रि आदि नोटिस वाज दवाई बेचने वालोंके टमाटम चटनी दमादमतिला, पलंगतोड़ गोलियां आदि नामोंके सदृश नाम धरकर संसारको धोखा दे रहे हैं। जिन पुस्तकोंमें केवल उपन्यासकी तरह पाठ करनेके अतिरिक्त अन्य कुछ भी उत्तम फल प्राप्त नहीं होता हैं। इसलिये रतिके वल्लभ (सम्भोग) सुखकी भलाई बुराईको बतानेवाली रति वल्लभ कुचोपनिषद् कुचिमारतन्त्र, नामसे प्रसिद्ध पुस्तककी हिन्दी भाषाकर पाठकोंके समर्पण करता हूं और सम्प्रति इस पुस्तकको छपाकर प्रकाशित करनेका अधिकार श्रीवेङ्कटेश्वर पुस्तक एजेन्सीके मालिक सेठ श्रीनिवासजी गिरधारीलालजीको देताहूं। अबतक जितनी पुस्तकें कुचिमारतन्त्रके नामसे छापी गयी हैं। उनको देखनेपर यह सन्तोष नहीं हुआ कि कोई भी पुस्तक श्लोक संख्यासे पूर्ण है और अशुद्ध नहीं? हमने इन दोषों के दूर करनेका यथा शक्ति पूर्ण प्रयत्न किया है। तथापि अशुद्धताका दोष रह जाना स्वाभाविक वात है। इसलिये हम जानते

हैं कि सामान्य स्वभावसे दुर्जन अशुद्धताको टटोलकर नाक मुंह सङ्कुचित कर सकते हैं। सज्जन उसको शुद्धकर पढ़ सकते हैं। और मेरी अनभिज्ञताको बाल भाषा समझकर क्षमा प्रदान कर सकते हैं। भगवान्की सृष्टिमें उत्तम अधम-मध्यम-उच्च-नीच अमृत, विष सिंहनर आदि सभी अपेक्षा नुसार गहरे सिद्धान्तको मानकर वनाये गये हैं। इसलिये मैं प्रातःकाल मुख धोनेके पूर्व-शुद्ध प्रक्षालनकी भांति दुर्जनोंको पूर्व अभिवादनकर पश्चात् सज्जनोंका अभिवादन कर यह पुस्तक संसारकी लीलाके ताण्डव नृत्यमें पण्डित साक्षात्त कामदेवको विजय करनेवाले और कामदेवके पिता अखिल ब्रह्माण्ड नायक आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्रके चरणा विन्दोंमें समर्पण कर प्रार्थना करता हूं कि संसारके समस्त प्राणी मात्र सुखी रहें। और सर्वदा कल्याणको प्राप्त हों। रोग रहित तथा सत्यके अनुरागी हों।

सर्वेच सुखिनस्सन्तु सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु सर्वेसत्यानुरागिणः॥

आपका—प्रिय वशम्वद
आयुर्वेद महामहोपाध्याय रसायन शास्त्री
भागीरथ स्वामी-आयुर्वेदाचार्य्य,
नं० १४३ हरिसन रोड, कलकत्ता।
सर्वहितैषी औषधालय,
नं० ६२ नार्थ चित्तरञ्जन एभिन्यू रोड, कलकत्ता।
आषाढ़ शुक्ल ११; संवत् १९८५

रतिवल्लभ का विषय सूचीपत्र ।

प्रथम पटलः

प्रथम पटलः समाप्त

द्वितीय पटलः

द्वितीय पटलः

तृतीय पटलः

पंचम पटलः

द्रावण ।

पंचम पटल समाप्त

षष्ठ पटलः

षष्ठः पटल समाप्तः

सप्तम पटल आरम्भ

सप्तमपटलः समाप्तः

अष्टमपटल आरंभ

लोम शातन

८ पटल समाप्त

नवम पटलः

परिशिष्ट भाग ।

नपुंसकताके भेद

नपुंसकता भेद,

समाप्त

शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

पञ्चसायक भाषा टीका सहित ।

नगर सर्वस्व भाषा टीका सहित ।

रतिवल्लभ दूसरा भाग भाषा टीका सहित ।

❀ कोकसार वैद्यक सचित्र ❀

कोका पण्डित कृत वैद्यक ग्रन्थोंका सार यह बहुत उत्तम काम-शास्त्रका अद्भुत भाषा टीका सहित ग्रन्थ तैयार हुआ है । मूल्य २)

❀ काम रत्न ❀

योगेश्वर नित्य नाथ प्रणीत विद्या वारिधि पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत भाषा टीका सहित है । इस ग्रन्थके काम शास्त्रादि विषय रोगोंकी औषधि तथा वाजीकरण औषधि अनुभूत हैं और इसमें वशीकरणादि प्रयोग भी हैं मूल्य २)

❀ अनंग रङ्ग ❀

महाकवि श्रीकल्यान मल विरचित मूल्य २॥)

❀ पंचसायक ❀

कवि शेखर श्री ज्योतीश्वर विरचित कीमत २)

❀ कंदर्प चूड़ामणि ❀

बघेल वंशावतंस महाराज श्री वीरभद्रदेव विरचित मूल्य ३॥)

मिलनेका पता :—

श्रीबेङ्कटेश्वर प्रेस पुस्तक एजेन्सी,
नं० १६५।२ हरीसन रोड, कलकत्ता ।

श्रीशङ्करं नमस्कृत्य यत्पूर्वैस्समुदाहृतम् ॥
हिताहितकरं नृणां मन्त्रौषधि समन्वितम् ॥१॥

फीकोलगै जाके विना संसार सुखका मूल है। धारे विरञ्ची आदि जिसको सृष्टिका भी मूल है। उसके पिताका ध्यान करि भागीरथी भाषाकरूँ। प्रेमीजनोको सुख दहो यह पूर्ण प्रिय आशा करूँ १ श्रीशिवजी महाराजको नमस्कार कर पूर्वाचार्य्यों द्वारा उत्तम प्रकारसे कहा हुवा, मन्त्र और औषधियोंसे युक्त मनुष्योंके हित और अहितको करने वाला ॥ १ ॥

संयोगादिष्ट सम्भारा दुपपन्नश्चतत्वतः ॥
कुचिमारेण तपसा यत्कृतंक्रीडनं पुरा ॥ २ ॥

इष्ट-(अभीष्ट=[अपेक्षित] सम्भार [सामग्री] सहित संयोग [सब प्रकारके प्रयोग सहित] पूर्व [प्राचीन समयमें] तत्वतः [सिद्धान्तसे] कुचिमारने तपसा [तपसे] क्रीड़ा स्वरूप जिसको बनाया ॥ २ ॥

तत्प्रवक्ष्यामि चित्रार्थ नानार्थ पद निश्चितम् ॥
श्रूयतांनामतश्चैव कुचोपनिषदं पुनः ॥ ३ ॥

उस नाना प्रकारके अर्थ और पदोंसे निश्चित अनेक विचित्र तात्पर्य्य वाले कुचोपनिषद नामसे प्रसिद्ध ग्रंथको मैं कहता हूं सो तुम सुनो ॥ ३ ॥

बृंहणं लेपनं चैव वश्य बन्धन वृष्यकम् ॥
कन्याकरं लोम कार्ष्ण्यं बन्ध्या प्रसव चिन्तनम् ॥४॥

जिसमें वृहण, लेपन, वश्य, बन्धन, वृष्य कन्याकर, लोम-कार्ष्ण्य, बन्ध्याकरण, प्रसव चिन्तन ॥ ४ ॥

पादलेपाञ्जनंतैलं रोमनाशन मेवच ॥
एवमादीनि कर्माणि श्रूयन्तां तत्प्रयत्नतः[१] ॥५॥

पादलेप, अंजन, तैल, रोमनाशन, आदि कर्म इसमें कहे गये। हैं। जिसको तुम यत्नसे (एकान्त चित्त होकर) श्रवण करो ॥ ५ ॥

ध्वजवृद्धि करणम्।

कमलदलतैलसैन्धव भल्लातकवीज मादहेदन्तः॥
बृहतीफलकफसहितं[२] माहिषं च मनःशिलाबृद्धि-करम् ॥ ६ ॥

कमल पुष्पके पत्र अथवा कमलका पत्ता तिलका तैल सेधा-

---

१ तत्समासतः इत्यपि पाठः

२ कफः कफेशरीरस्थ सौम्यधातुविशेषे कपित्थवृक्षे राजनिघंट्वेकादशवर्गे समुद्र फेने चक्रदत्ता र्शश्चिकित्सायां प्रलेपे इतिवैद्यकशब्द सिन्धुः । कफादयः कैडर्य्ये । निम्बविशेषे=पार्वतीये=(पहाडी निम्ब या पहाड़ी वकायन)

नमक भल्लातक-बीजको कड़ाहीमें डालकर खूव सेककर उसमें बैंजनी फूल वाली कटेलीके फल पहाड़ो बकायन (कैड़र्य्य) भैंसका घृत-मैनशिल समभाग खूव घोटकर, मिलाकर इन्द्रीपर लेप करना चाहिये। इससे ध्वजकी वृद्धि होती है ॥ ६ ॥

कारवल्लीफलं[१] सर्ज-जलशूक[२] समायुतम् ॥
बृहतीफलतोयेन लेपः शिश्न विवृद्धये ॥ ७ ॥

शिश्नकी वृद्धिके लिये छोटे करेला [जंगली करेला [के फल राल, जलशूक भूनाग (गेसा=केचुवा) समान भाग लेकर महीन पीसकर बड़ी या छोटी कटेलीके फलके स्वरसमें मिलाकर लेप करना चाहिये ॥ ७ ॥

विशेष बात-यहां पर कोई वैद्य जलके शिवालको कोई जलकी धारके सामने चलनेवाले कीड़ोंको ग्रहण करते हैं। परन्तु प्रकरणा भावसे जलका शिवाल नहीं ग्रहण करना चाहिये। प्रमाणभावसे जल भ्रमर नहीं ग्रहण करना चाहिये । यहां केचुवा (भूनाग) लेना चाहिये।

---

१ कुडुहुच्यां कारवल्ली कार्ण्डीरेचीरपत्रके इति राजनिघं:

२ बहुतसे टीकाकारोंने जलशूक पानीमें होने वाले शिवालको तथा जोख को लिखा है। परन्तु उसका यहां ग्रहण नहीं है। किन्तु डुण्डुभादि जन्तु (गेसा) ग्रहण करना चाहिये। शूकस्सविष जल मलोद्भव स्त्वल्य डुण्डुभादि-जन्तौ शूकप्रधान लिंग वृद्धि करयोगे इति शब्द कल्पे वात्स्यायतः

तिल सर्षपयोश्चूर्णं सप्तपर्णस्य भस्म च ॥
जलशूकं क्रमाल्लिम्पेल्लिङ्गं स्यान्मुशलोपमम् ॥८॥

तिल और पीली सरसोंके चूर्णको जलमें पीसकर एक दिन लेप करना चाहिये द्वितीय दिवस सप्तपर्ण [छतिवन] के पञ्चाङ्गकी भस्मका लेप करना चाहिये। तृतीय दिवस जलशूक [भूनाग=गेसा] को जलमें पीसकर लेप करना चाहिये। इस क्रमसे लेप करने पर शिश्न मूसलके तुल्य हो जाता है ॥ ८ ॥

विशेष—साधारण कमजोरीमें दिनमें ३ वार क्रमपूर्वक लगानेसे फायदा होता है। विशेष दिनोंके दुर्बल इन्द्रियवाले पुरुषको इसी क्रमसे बराबर १५ दिन तक लगाना चाहिये और ब्रह्मचर्य रखकर इस दवाईका सेवन करना हितकर है। अन्यथा विना समझे भूलसे लगाने पर तकलीफ हो सकती है।

भल्लातकानि हरिताशन भस्मरूढ़ ।
मम्भोजपत्र बृहतीफलतोय मिश्रम् ॥
उद्वर्तयेतशकृता महिषस्य लिङ्गं ।
स्थूलं दृढं भवति तन्मुशलोपमानम् ॥ ९ ॥

भिलावा हरित (प्याज) अशन (बड़े लाल फूलना लेशाल= कोरों) भस्मरूढ़ दग्ध रुहा (कुरही) कमलके पत्ते कटेली फलके स्वरसमें मिलाकर पीछे भैंसके गोवरमें मिलाकर लेप करना

चाहिये। इससे मोटा और शक्ति सम्पन्न मूसलकी तरह शिश्न होता हैं ॥ ६ ॥

विशेष बात—अनेक टीका कारोंने हरिताशन शब्दका अर्थ तुत्थ को भस्म लिखा है। वह प्रमाणा भावसे अशुद्ध है। तूतियाका नाम हरिताश्म हैं। हरिताशन नहीं हैं। दूसरी बात यह है कि हरिताशनका अर्थ तूतिया केवल करके भी रूढ़ शब्दका कुछ भी अर्थ नहीं किया। यह टीका कारोंका पूर्ण भ्रम है। हरित नाम १—हरितं-कुरीधान्ये-पेरोजे (पिरोजारत्ने) स्थौणेयके (गठिवन नामके सुगन्धित द्रव्य विशेषे। हरितः पलाण्डौ (प्याजे) मन्थानक तृणे-स्थूलारग्वध वृक्षे (अमलतासे) सविष मण्डूके उत्तरापपिकायां उत्तरदिशामें होनेवाला, हरित बलामोटायां (नागदमन्यां)अशनं (अरुणपुष्प युतवहच्छालवृक्षे) लाल पुष्प वाले शाल (कोरों)का वाचक होनेसे उसकी छाल लेना चाहिये। भस्म-रूढ़ भस्म रुहा-दग्ध रुहा-कुर हीका वाचक हैं।

रोमांसं१ जलशूकंच माहिषंघृत मेवच ॥
एतेनोद्वर्तयेल्लिङ्गं स्थूली भवति शाश्वतम् ॥१०॥

तेजपत्र, केचुवा (गेंसा) भैंसके घृत-में घोटकर निरन्तर कई दिन तक लेप करनसे शिश्न मोटा होता है। ॥ १० ॥

रोमशम्। पत्रे (तेजपत्ता) पिण्डालुशाके कोंकण प्रसिद्ध कुम्भी वृक्षे रा० नि० व ९ रोमशा-दग्धा दग्धरुहा-कोंकणे कुरहीते ख्याते रा० नि० व ९ कर्कटिकायां त्रि० शे। १ अलगर्द नामक सविषजलौका भेदे। (जलगर्द-जौख) इति भाषा।

विशेष बात-यह है कि-अन्य टीका कारोंने रोमांस शब्दका मांस रोहिणी अर्थ लिखा है। परन्तु किसी भी निघंटुमें रोमांस शब्द नहीं मिलता है। कोई कहता हैं रोमशम्-पाठ होना चाहिये-जिसका तेजपत्र और पिण्डालुशाक भी अर्थ होता है। परन्तु मेरी सम्मतिसे यहां रोमशं पाठ होना चाहिए। इसका कौङ्कण देश प्रसिद्ध कुम्भी वृक्षका अर्थ दग्ध रुहा किया गया है

निर्मलंलिङ्ग मुद्धृत्य गोमयेन पुनः पुनः ॥
सिक्तं जलेन शीतेन यावदिच्छति मानवः ॥११॥

दिनमें वार वार गोवरका लेप कर शीतल जलसे जबतक इच्छा हो तबतक सिञ्चन करते रहिनेसे शिश्न स्थूल रहता है॥११॥

विशेष बात यह है कि-गुप्तइन्द्रिय स्थूल तो अवश्य होती है परन्तु अधिक उत्तेजना न होने देवे। अधिक उत्तेजनासे वीर्य्यपात होनेका भय है। उसपर तत्काल जल डालनेसे उत्तेजना करनेवाली नाड़ियां कमजोर हो जाती हैं। प्रमेह हो जाता है।

कारवल्ल्यश्वगन्धा च जलशूकं च तत्समम् ॥
बृहतीफल तोयेन लिङ्ग वृद्धिः प्रशस्यते ॥१२॥

जंगली छोटा करेला असगन्ध-भूनाग-केचुवा (गेसा) सबका सयभाग चूर्ण लेकर कटैयाके स्वरसमें घोटकर लगानेसे लिङ्गकी वृद्धि होती है॥ १२॥

सर्षपं तगरं कुष्टं तालीशं[१] बृहतीफलम् ॥
जलशूकाश्वगन्धा च समादायैक भागतः ॥१३॥

पीली सरसों-तगर कडुवा कूठ-तालीशपत्र छोटी और बड़ी कटेलीके फल, गेसा=केचुवा असगन्धा समभाग लेकर॥ १३॥

अनेक पुस्तकोंमें ताली न पाठ मिलता है परन्तु यह शब्द किसी निघंटुमें नहीं मिलता है। यहां तालीशं पढ़ना चाहिये। तालीनं अशुद्ध शब्द हैं।

अजाक्षीरेणसंपेष्यकुर्यादुद्वर्तनं पुनः ॥
कर्णलिङ्ग स्तनानांतुबृद्धिरेषा प्रशस्यते ॥१४॥

बकरीके दूधमें खूब पीसकर लेप करनेसे तथा उवटना करने से कान-लिङ्ग स्तनोंकी वृद्धि होघी है॥ १४॥

अश्वगन्धा च कुष्टं च मांसं शवर कन्दकम् ॥
एतदुद्वर्तितं शेफं स्थूली भवति शाश्वतम् ॥१५॥

अश्वगन्धा (असगन्ध] कडुवाकूठ जरामांसी बड़े लोघके कंदके जलमें पीस कर उवटन वा लेप करने से शेफ मोटा होता है॥ १५॥

विशेष—अनेक पुस्तकोंमें शाल्मलि कन्दज पाठ है वहां सेमरके कंदका गूदा लेना चाहिये—यहां मांस शब्द गूदेका वाचक है शावर कन्दज मांस अर्थात लोध कन्दका गूदा या शाल्मलिकन्दजम् (कम्) शाल्मसि (सेमर) कन्दका मांस गूदा, ग्रहण करना चाहिये कुछ

टीका कारोंमें मांस शब्दसे जटामासी और शावरकन्द शब्दसे वाराहीकन्दका ग्रहण किया है। वह प्रमाणाभाव और प्रकर्णा भावसे अशुद्ध हैं ॥ १५ ॥

करवीर मपामार्ग मश्वगन्धा च छत्रकम् ॥
लाङ्गल्यन्तशिखा चैव सुबीजं कुलिजस्य च ॥ १६ ॥

सफेद करनेरकी मूल अपामार्ग (चिरचिरेकी मूल) असगन्धकी मूल (छत्रक) तालमखाना कलिहारीकी अन्तश्शि खा (जमीनके भीतरकी जड़" कुलिजस्य (कटेरीके) सुबीज (साफ किये हुवे बीज ॥ १६ ॥

कर्णबाहु भगाश्चैव वामाक्षीणां कुचद्वयम् ॥
वर्धंते नात्र सन्देहः प्रघृष्यो द्वर्तने पुनः ॥ १७ ॥

खूब पीसकर लेप करनेसे कान हाथ भग तथा स्त्रियोंके दोनों कुच बढ़ते हैं। इसमें सन्देह नहीं है ॥ १७ ॥

अश्वगन्धा मपामार्गं बृहतीं श्वेत सर्षपम् ॥
कुष्ठंतगरचूर्णं च पिप्पली मरिचानि च ॥ १८ ॥

अश्वगन्धा (असगन्धकी जड़) अपामार्ग (चिरचिरा) कटेलीके फल पीलीसरसो कडुवाकूठ तगरका चूर्ण बड़ी पीपल कालीमिर्च ॥ १८

एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत् ॥
वर्धते लेपनाल्लिङ्गं नारीणां च पयोधरम् ॥ १९ ॥

यह सम भाग लेकर बकरीके दूधमें खूब महीन पीसकर लेप करनेसे पुरुषोंका शिश्न और स्त्रियोंके पयोधर (स्तन) बढ़ते हैं अर्थात् मोटे होते हैं ॥ १६ ॥

अश्वगन्धां वचां कुष्ठं बृहतीं श्वेत सर्षपम् ॥
एतेन वर्धतेलिङ्गं नारीणां च पयोधरौ ॥ २० ॥

असगन्ध घुडवच कडुवाकूठ छोटी या बड़ी कटेलीके फल सफेद सरसोंको सम भाग लेकर खूब महीन चूर्णकर बकरीके दूधमें घोलकर लगानेसे पुरुषोंका लिङ्ग स्त्रियोंके स्तन बढ़ते हैं। अर्थात मोटे होते हैं ॥ २० ॥

पत्रं प्रियंगुनागाह्वं स्यात्तृणां चाश्वगन्धियत् ॥
संचूर्ण्य मधुतैलेन शालिधान्येन दापयेत्॥ २१ ॥

पत्रं तेजपत्र-या तालीश पत्र) प्रियङ्गु (गन्ध प्रियंगु) नागाव्हं (जंगली चम्पा) तृणं (कत्तृण-सुगन्धित तृण=हरद्वारी घास) असगन्धका समभाग चूर्णकर मधु (सहित) तिलीका तैल मिलाकर शालि (धान्य राशिमें) गाड़ देना चाहिये ॥ २१ ॥

चत्वारिंशद्दिनादूर्ध्वं मुद्धृत्य कतिचिद्दिनैः ॥
स्तनयोर्लेपनं कुर्यात् पश्चात्पीनस्तनी भवेत् ॥२२॥

---

१ निधापयेत्। तृणम्-कत्तृणम् वातृणपंचकम्। पत्रं तमाल पत्रम्॥ पत्रम्=तालीशकम् + पत्रम्=पत्र विषभेदः। पत्रः=कपित्थः॥

४० दिनके पीछे किसी दिन निकालकर स्तनोंपर लेप करनेसे स्त्रियोंके स्तन मोटे हो जाते है ॥ २२ ॥

विशेष बात—अनेक टीकाकार नागाव्ह शब्दसे नागकेशर लिखते हैं वह प्रमाण रहित होनेसे अशुद्ध हैं इसलिये यहां जंगली चम्पा लेना चाहिये । शालि धान्येनदापयेत्–यह पाठ भी अशुद्ध है यहाँ शालि धान्ये निधापयेत् ऐसा पाठ चाहिए ।

हस्त्यश्वमूत्रे खर सम्भवे च तैलं तिलानां त्रिपचे द्विधिज्ञः ॥ तस्याथ लेपेन विलासिनिनांपीन नस्तनौ तज्जघनाधरं च ॥ २३ ॥

हाथीके और घोड़ेके तथा गधेके मूत्रमें तिलोंके तेलको तैल बनानेकी विधि जाननेवाला विधि पूर्वक पकावे । इस तेलके लेपसे विलासिनी स्त्रियोंके दोनो स्तन जंघा और ओठ बढ़ते हैं ॥२३॥

तिलसर्षपयोश्चूर्णं सप्तपर्णस्य भस्म च ॥
घृतयुक् सूर्यसंतप्तं लिङ्गबृद्धिकरं भवेत् ॥ २४ ॥

तिल और सरसोका चूर्ण सप्तपर्ण (छतिवन)की भस्मको चौगुने घृतमें मिलाकर दो तीनदिन धूपमें रखकर लगानेसे लिंगकी वृद्धि होती हैं ॥ २४ ॥

माषपत्रं सकर्पूरं नवीन मधुनासह ॥
एतेनलिङ्गबृद्धिः स्यात् स्त्रीणां च महतीरतिः ॥२५॥

उड-दकेपत्ते तथा माष-पर्णीके पत्र कपूरको पीसकर नवीन सहित मिलाकर लेप करनेसे पुरुषोंकी लिंग वृद्धि होती है और स्त्रियोंकी विशेष रति (प्रीति) होती है॥ २५॥

सार्षपं च तथा तैलं सार्धं च विपचेत्ततः॥
वाजिगन्धा समासेऽन्या स्तनकर्णादिवर्धनम्॥२६॥

सरसोंका तेल और सरसोंका चूर्ण मिलाकर अग्निपर पकाकर समान भाग असगन्ध मिलाकर लेप करनेसे स्त्रियोंके स्तन और कान बढ़ते हैं॥ २६॥

एरण्डं बाजिगन्धा च वचाशावर मूलकम्॥
घृतंक्षीरंवसातैलं कर्णादीनि विवर्धयेत्॥ २७॥

एरंड बीज (अंडीके बीजको मिगी) असगन्धा-घुड़वच लोध की जड़को खूब महीन पीसकर—घृत-दूध चरबी तेल मिलाकर लगानेसे कान स्तन आदि बढ़ते हैं॥ २७॥

यष्ठीकधुक चूर्णं तुक्षीरऽन्यामिश्रितं पुनः॥
बृहतीफलतोयेन लेपनंकुर्वतां स्त्रियः॥ २८॥

केवल मुरहटी चूर्णमें या मुरहटी और महुवाके चूर्णमें दूधकी भावना देकर कटेलीके फलके स्वरसमें मिलाकर लेप करनेसे—स्तन आदि बढ़ते हैं॥ २८॥

विशेष बात—यष्टी मधुकचूर्णन्तु यहां यष्टी-मुरहटी-मधुक-

महुआ दोनोंका अर्थ नहीं है किन्तु यष्टी मधुक शब्दसे केवल मुरहटी लेना चाहिये ।

अश्वगन्धा वचाकुष्ठं मांसी सर्षप संयुतम् ॥
एतदुद्वर्तनं श्रेष्ठं स्थूलंभवति शाश्वतम् ॥ २६ ॥

असगन्ध घुड़बच-कडुवा कूठ-जटामासी सफेद सरसों जलमें पीसकर निरन्तर लेप करनेसे शिश्न-अत्यन्त स्थूल होता है ॥२६॥

अश्वगन्धा सुरावल्लीशूकं सर्षपमेव च ॥
बृहतीफलतोयेन लिङ्गवृद्धिः प्रशस्यते ॥ ३० ॥

असगन्ध-सुरा-(मद्य-शराव) वल्ली=कैवर्त्त मुस्तक । एक प्रकारका नागर मोथा–शूक (वर्षा कालमें होनेवाली गोजाई कीड़ा) सफेद सरसोंको समान भाग कंटकारीके फलके स्वरस में घोटकर लेपकरनेसे लिंगकी वृद्धि होती हैं ॥ ३० ॥

कुलिजंकरवीरं[१] च लांगली चित्रकं तथा ॥
अपामार्गं वाजिगन्धं तिलतैलेन चूर्णितम् ॥ ३१ ॥
कर्णवर्धन मेतत्तुनारीणां च पयोधरौ ॥
बाहूनां वर्धनं कुर्याल्लिंगानां चापिवर्धनम् ॥ ३२ ॥

सुरा-मद्यम् वल्ली-कैवर्त मुस्तायां रा० नि० व० ३ अजमोदायां मदन पाल निघट्टु वर्गं २ अग्नि दमन्यां कृष्णापराजितायां लतायां इति वैदिक निघंट्टः ॥

१ कुलिः (लीं) चविकायां-रत्नाकरे, कण्टकार्य्यां-मे० पु० काञ्चनार भेदे, मद० वर्ग १ चटकपत्रियां, वै० नि०

चव्य-श्वेत कनेरके मूलकी छाल—कालिहारी चित्रकके मूलकी छाल—अपामार्ग (चिरचिरा) असगन्ध समान भाग लेकर चूर्ण कर तिलके तैलमें मिलाकर—कानोंमें लगानेसे कानोंकी वृद्धि हो—और स्त्रियोंके स्तनोंमें लगानेसे स्तनोंकी वृद्धि हो—बाहुवोंमें लगानेसे बाहुवोंकी वृद्धि हो। शिश्न पर लगानेसे शिश्नकी वृद्धि होती हैं॥ ३१॥

विशेष बात—कुलिजंके स्थानपर कुलीरं करवीरं पाठ भी सुना है। वहांवृहत्कर्कट तथा क्षुद्रकर्कटका अर्थ होता है। कई लोग कुलीर पाठको ठीक नहीं कहते वह कुलिज हीको ठीक बताते हैं उनके मतमें कराटकारीका (करेली) या चटकपक्षी (चिड़ा) का ग्रहण हो सकता है। मेरे मतमें कंटकारीका ग्रहण करना ठीक हैं।

तमालपत्रं तगरं मुश्मत्यस्यापि पञ्चकम्॥
लेपेन शेफसोवृद्धिः स्तम्भनं चोष्णवारिणा॥३३॥

तमालपत्र-तगर उश्मतीके पञ्चाङ्गको शीतलजल मिलाकर लेप करनेसे शेफ (लिंग) की वृद्धि होती है। गरम जलके साथ लेप करनेसे स्तम्भन होता है॥ ३३॥

विशेष बात—उश्मती शब्द किसी निघंटुमें नहीं मिलता है न कोई इसका अर्थ हैं किसी टीका कारने इसपर विचार नहीं किया—परम्परासे इसी अशुद्ध शब्दको सर्वदा मूलमें लिखकर उश्मतीका पञ्चाङ्ग अर्थ करते हैं।

मेरी समझमें उष्ण स्यापिच पञ्चकम्-पाठ समझना चाहिये-राज निघंटुमें भी पाठ भेद है कोई ऊली-कोई उल्ली-उली-कोई उष्णी कोई उष्ण पाठ कहता है उल्लीत्यस्यापि -वा-उल्ली प्रथित पंचकम् । यहां पलाण्डु (प्याजका) पञ्चाङ्ग डालना माहिये ।

किमत्रचित्रं यदिवज्रावल्ली—
बचाश्वगन्धा जलशूक चूर्णम् ॥
हेमप्रकाशं वृहती फलञ्च
क्षणेन कुर्यान्मुसल प्रमाणम् ॥ ३४ ॥

यदि वज्र वल्ली (हड़जोड़) घुड़वच-असगन्ध-वीरबहूटी पीत-वर्ण वाले पके हुवे कराटकारीके फल सम भाग पीसकर जल मिलाकर लेप करनेसे थोड़ी ही देरमें शिश्न मूसलके समान मोटा होता हैं यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है ॥ ३४ ॥

विशेष बात यह हैकि लेपमें बकरीका मूत्र मिलाकर या गर्म जल मिलाकर लगानेसे फ़ायदा होता है ।

गोशृंग[१] मूलं कनकस्य बीजं
बचाश्वगन्धा जलशूक चूर्णम् ॥
हेमाम्बुवर्णं बृहती फलञ्च
क्षणेनकुर्या न्मुसल प्रमाणम् ॥ ३५ ॥

---

१ गोश्रृंगो-बर्बुरश्च-इति राजनिघण्टुः

इति कुचिमार यन्त्रे ध्वजवृद्धि करणाधिकारे प्रथमः पटलः ॥

गोश्रृंगमूल (वंबूलकी जडकी छाल) धतूराके वीज वच असगन्ध जलशूक (गेसा) पील पके हुवे करेलीके चूर्णको वकरीके दूधमें मिलाकर लेप करनेसे मूसलके समान शिश्न होता है ॥३५॥

विशेष वात–वहुतसे टीका कारोंने गोश्रृंग मूल शव्दसे गौके शींगकी जड़ लिखी है। वह अशुद्ध है। यहां गोश्रृंग मूल शव्दसे ववुर (वंवूलकी जड़की छाल) लेना चाहिये। कितने ही लोग इसमें वीर वहूटी डालते है।

इति आ० म० म० र० शा० आयुर्वेदाचार्य्य भागीरथस्वामि विरचितायां भागीरथी भाषाटीकायां कुचिमारतन्त्रे ध्वजवृद्धि करणाधिकारे प्रथमः पटल स्समाप्तः।

अथ लेपनम्।

कदम्ब वृक्ष पत्राणां सूक्ष्म चूर्णं तुकारयेत् ॥
मधुना सहसंयुक्तो लेपःस्यादुभयोः सुखम् ॥ १ ॥

कदम्बके पत्तोंका महीन चूर्ण कर सहितके साथ लेप करनेसे रति समयमें दोनोंको सुख प्राप्त होता है ॥ १ ॥

लवणं पिप्पली मूलंमधुकं मधुसंयुतम् ॥
कपित्थ रससंयुक्तो लेपःस्यादुभयोः सुखम् ॥

सेंधा नमक पिपला मूल, मुलहटी सहित समान भाग लेकर कैथाके रसको मिलाकर लेप करनेसे दोनों स्त्री पुरुषोंका सुख होता है ॥ २ ॥

स्वयंगुप्तस्य रोमाणि सैंधवंशर्करामधु ॥
लेपमेनं प्रशंसन्ति दम्पत्योः प्रीतिवर्धनम् ॥ ३ ॥

१ कोचकी फलीके रोम—सेंधानमक-शर्करा-सहित मिलाकर लेप करनेसे दोनों स्त्री पुरुषोंके प्रेमकी वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

मधुनामधुकं चापियोषिदं जलिकारिका ॥
कुष्ठेन सहसंयुक्तोलेपो हृदयतापनः ॥ ४ ॥

मधुक=मुरहटी योषित-हरिद्रा अंजलि--कारिका—लज्जालु (लज्जावंती) के बीज कडुवाकूट समभाग लेकर चूर्ण कर सहित के साथ मिलाकर शिश्नपर लेप करनेसे हृदयका ताप करने वाला है ॥ ४ ॥

विशेष विचार यह है कि मधुक शब्द—महुवाका बाचक है परन्तु वाजीकरण आदि कार्य्योंमें प्रायः यष्टीमधु (मुरहटी) का ही शास्त्र कारोंने ग्रहण किया है। इसलिये यहां यष्टीमधु लेना चाहिये

बचापाठा मधूच्छिष्टं तथावाकुचिकर्णिका ॥
वृश्चि कालि समायुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः ॥ ५ ॥

वाकुची-सोमराजी। कर्णिका-सूक्ष्म गोधूम चूर्णन्तु कर्णिका समुदा हृता रा नि०। कर्णिका-अग्निमन्थः। काकोली-तरणी-यूथिका।

घुड़ वच पाठा [जलजमनी] मोम-वाकुची (सोमराजी) की कर्णिका (कण) चूर्ण वा वाकुची कर्णिका (जुहीके पुष्प तथा पत्र) तथा गुलावके पुष्प वृश्चिकाली समभाग लेकर चूर्णकर गर्म जल मिलाकर लेप करना चाहिये। यह लेप मरणान्तिक हैं। अर्थात इस लेपको लगाकर जिसके साथ संगम किया जावे वह मरण तक साथ रहे ऐसा प्रेमोत्पादक है ॥ ५ ॥

विशेष—वकुचि शब्द यहां अशुद्ध हैं किन्तु शुद्ध वाकुची है। शुद्ध करनेसे श्लोकमें छन्दो भंग होनेके कारण श्लोक अशुद्ध हो जाता है। वाकुचि कर्णिका शब्द भी अशुद्ध है। अतः कर्णिका शब्द भिन्न करनेसे भी वाकुचि शब्द अशुद्ध है।

यवालोध्रमुसीरं च मञ्जिष्ठागौर सर्षपम् ॥
क्षौद्रेण सहसंयुक्तो लेपोऽयं मरणांतिकः ॥ ६ ॥

यव-(इन्द्रयव) पठाणीलोध खस-मजीठ सफेद सरसों समभाग लेकर खूब महीन पीसकर सहितमें मिलाकर लेप करना चाहिये यह दोनोंको प्रसन्नताका देनेवाला है। और मरने तक साथ जाने वाले प्रेमकी रक्षा करने वाला है ॥ ६ ॥

ब्रह्मदण्डी मधुरसं पिप्पल्यो मरिचानि च ॥
वैशिकानामयंलेपः कुलस्त्रीणां न दापयेत् ॥ ७ ॥

ब्रह्मदण्डी-मधुरस (ताड़का फ़ल) छोटी पीपल कालीमिर्चका चूर्णकर मधु मिलाकर लेप करनेसे दोनोंका प्रेम बढ़ता है। यह लेप वेश्याओंके लिये ही हितकर है। इसको लगाकर कुल स्त्रीके

पास नहीं जाना चाहिये। अथवा यह लेप वेश्याओंके लिये दे देना चाहिये परन्तु कुलकी स्त्रियोंको नहीं देना चाहिये ॥ ७ ॥

मधुना वृश्चिका[१] लेपः कपिशेफस्तु सर्पिषा ॥
राजानुलेप नामानौ प्रद्युम्नेन प्रकीर्तितौ ॥ ८ ॥
नमस्त्रिशूलिने कर्णाय ठः ठः ॥

सहितके साथ वृश्चिक (पुनर्नवाको) या बीछीके पेड़को) पीसकर लेप करके या-वानरका शेफ-घृतमें घोट कर लेप करके नम स्त्रिशूलिने कर्णाय ठः ठः यह मन्त्र जपना चाहिये। यह लेप प्रद्युम्नने कहा है। इसका नाम राजानुलेपन है ॥ ८ ॥

विशेष बात-यहां वृश्चिक शब्दसे बहुतसे टीकाकार बिच्छु जीव ग्रहण करते हैं। कोई पुनर्नवा वृश्चिका (बिच्छुके वृक्षके) पत्रोंका ग्रहण करते हैं। हमारी समझमें बिच्छूके पत्रोंको लेना चाहिये।

मनुष्य दन्तं लवणं सैंधवं माक्षिकंतथा ॥
मधुना सहसंयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः ॥ ९ ॥
श्यामयाश्चायंमन्त्रः।
"अप्सराश्च विमानश्च ठः ठः" अष्टशतं परिजप्यप्रयुञ्जीत ॥

मनुष्यके दाँत सेंधानमक सोनामक्खी-या रूपा मक्खी-खूब महीन पीसकर सहित मिलाकर लेपकर-अपसरा श्च० इस

---

१ वृश्चिकः पुनर्नवा वृश्चिका (ताम्रपर्णी) बिछुआ इति।

मूलमें लिखे हुवे मन्त्रका ८०० जप करना चाहिये। यह लेप भी मरणतक प्रीति स्थापन रखनेवाला है॥ ९॥

करवीरस्य निर्य्यासं पिप्पलीतण्डुलं तथा॥
मधुना सहसं युक्तोलेपः कन्दर्पवर्धनः॥ १०॥

कृष्णायाश्चायंमन्त्रः।

"नमोनमस्स ठः ठः अष्टशतं परिजप्य मृत्तिक

सफेद कनरेका निर्य्यास (गोंद) पीपल छोटी—साठीचावल या सामान्य चावलका समभाग चूर्णकर सहितमें मिलाकर मूलमें लिखे हुवे—नमोनमः—इस श्यामाके मन्त्रका ८०० वार जप कर लेप करना चाहिये, यह लेप कामदेवके बढ़ाने वाला है॥१०॥

पिप्पली तण्डुलं चैव पुष्पाणिन्तुरकस्य च॥
वृहतीफल संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः॥११॥
गम्भिलेदि मन्याश्चायंमन्त्रः नमस्स ठः ठः॥
एकविंशतिवारान् परिजप्यलेपयेत्॥

पीपल—साठीचावल—गोक्षुर पुष्प-कटेलीके फल—समभाग लेकर मधुके साथ मिलाकर धर देवे। और—नमस्स ठः ठः इस गम्भिल दे मन्याका २१ बार जपकर लेप करना चाहिये। यह लेप भी मरणतक प्रेम रखनेवाला है॥ ११॥

पिप्पली तण्डुलंलोध्रं शृङ्गवेरसमं तथा॥
तगरोत्पल-गन्धाश्च तथा वल्मीक मृत्तिका॥१२॥

पीपल छोटी-साठी चावल-पठाणीलोध तगर उत्पल गन्धा-(विशेषसुगन्धित चन्दन) सर्पकी वाम्बी (विल) की मट्टी, सब समभाग चूर्णकर अदरखका रस समभाग सूखी हुई अदरख या शुंठी ॥ १२॥

विशेष बात—उत्पलगन्धा शब्द नहीं मिलता है तथापि यह शब्द उत्पलगन्धिक शब्दको देखकर बनाया हुवा विदित होता है। उत्पलगन्धिक शब्द विशेष सुगन्धित चंदनका नाम है।

अजन्यस्य कदम्बस्य पुष्पाणि च फलानि च ॥
क्षौद्रेण सहसंयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः॥ १३॥
इति श्रीकुचिमारतन्त्रे प्रलेपाधिकारे द्वितीयः पटलः ॥

अजन्य कदम्बके पुष्प और अथवा फलोंके कल्कमें सहित मिला-करलेप करना चाहिये। यह लेप मरणतक प्रेम रखने वाला है ॥३॥

विशेष बात यह है-अजन्य कदम्ब—या अन्य अजन्य नामक कोई औषध नहीं है। यहां पाठ अशुद्ध है यहां अजथ्यायाः पाठ चाहिये। जिसका अर्थ पीली जुहीके पुष्प हैं। इतिश्रीकुच मारतन्त्र प्रलेपाधिकारे-जयपुर राज्यान्तर्गत भामोद ग्राम निवासि हनुमत्पुत्र आयुर्वेद महामहोपाध्याय रसायन शास्त्रि आयुर्वेदा चार्य्य भागी-रथ स्वामि कृतायां भागीरथी भाषाटीकायां द्वितीयः पटलः

१ अजन्यस्यका—कोई अर्थ नहीं हैं। यहां अजथ्यायाः पुष्पाणि कदम्बस्य फलानि(पीली जुहीके फूल-कदम्बके फल) लेना चाहिये

स्त्रीणां जाति स्वरूपं तथा रतिसमयादि वर्णनम्

देवसत्वातु या नारी सोमवर्णा सुरूपिणी ॥
प्राच्यांशिरसिदातव्यं याभकाले विशेषतः ॥ १ ॥

स्त्रियोंकी देवादि वलयुक्त जातियोंके अनुसार रतिसमयादि वर्णन ।

देवसत्व वाली स्त्री सोम (चंद्रसमान) वर्ण वाली गौरवर्णा सुरुपिणी होती है रतिकालमें उसका शिरपूर्वमें करना चाहिये अर्थात वह पश्चिममें पैरकर शयन करे ॥ १ ॥

कृष्णाचमधुकं चैवकर्पूरंक्षौद्र नागरम्
पाटलीरससंयुक्तं नारीहृदय वल्लभः ॥ २ ॥

छोटी पीपल मधुक (मुरहटी) कर्पूर क्षौद्र (सहित) सोंठ सब समान भाग लेकर पाटली (सोना पाठा) के पत्तोंका स्वरस मिला कर लगाना चाहिये यह देवसत्व वाली स्त्रियोंके हृदयको बहुत प्रिय है ॥ २ ॥

मुनिसत्वातु या नारीमातृवृत्त प्रभासिता ॥
उदीच्यांमूर्ध्नि दातव्यं याभकाले विशेषतः ॥
(सदानरैः) ॥३॥

मुनियोंके सत्व (बलसे) युक्त-मुनिसत्वानारी मातृवृक्ष (मूषा-कर्णीके) समान स्वच्छ स्वेत वर्णवाली होती है। उसका मुख रतिकालमें उत्तरमें सर्वदा करना चाहिये ॥ ३ ॥

विशेष बात--मातवृक्ष यह पाठ किसीमें सात वृक्ष पाट मिलता है। सात वृक्ष–मात वृक्ष आयुर्वेदमें कही नहीं मिलता है । इसलिये मातृवृक्ष पाठ समझना चाहिये। याभकाले सदानरैः किम्वा विशेषतः। दोनों पाठ मिलते हैं ÷ दोनों ही पाठ ठीक हैं

वार्ताकफल सारेण लवणस्य तुलेपनम् ॥
मुलेद्व्यंगुल मालिप्यशुष्केलिंगे यभेत्पुनः ॥४॥

बैगनके फलका स्वरस निकालकर शेधानमक मिलाकर शिश्न के मूलसे दो अङ्गुलतक लेप करना चाहिए लेपके सूख जानेपर रमण करना चाहिये ॥ ४ ॥

इतस्ततो निश्चलति हास्ययुक्त प्रियस्वदा गान वाद्य प्रियानित्यं स्मरनृत्या भीलाषिणी चटके व चञ्चला स्निग्धासा गन्धर्व सारिका ॥ ५ ॥
गन्धर्वसत्वा यानारी पश्चिमे शिरसियभेत् ॥ ६ ॥
क्षौद्रेणसाञ्जनं पिष्ट्वामत्स्यपित्तंचतुः समम् ॥
आलिप्यमेढ्रं यभतांसुखंस्या दुभयोस्तथा ॥ ७ ॥

---

१ माता नाम आखुकर्णी-ऐन्द्रीभूसरी-महाश्रावणिका मांसीके नाम है इति धन्वन्तरिः ।

इधर उधर चलनेवाली हास्ययुक्त प्रिय शब्दोंको बोलने वाली नित्य गाने बजानेको प्रिय समझने वाली-स्मर नृत्यकी अभिलाषा रखनेवाली ५। चिड़ियाकी तरह चंचल जरासी देरमें इधर जरासी देरमें उधर गमन करनेवाली स्नेह गुण युक्त गन्धर्वसत्व वाली स्त्री होती है॥ उसका रतिकालमें पश्चिममें शिर करना चाहिये। ६ काला सुरमा चतुस्सम—(हरीतकी लवङ्ग१ सैंधव यवानी) हरड़ छोटी लवङ्ग-सेंधानमक-अजवायन) अथवा सफेद-चंदन२ अगर कस्तूरी-केशर किम्वा-जायफल-लवङ्ग टङ्कण (सुहागा फूला हुवा) मत्स्यका पित्त-सहितमें मिलाकर लगानेसे स्त्री पुरुषोंको अत्यन्त सुख मिलता है॥ ७॥

विशेष बात—यह है ५। और ६ का श्लोक और पुस्तकोंमें नहीं हैं और चतुस्समका अर्थ किसीने नहीं किया है—हम नहीं जानते हैं टीककार क्यों भूल गये।

रक्षःसत्वातु या नारीमत्स्यमांस प्रियाशुभा
उर्ध्वकेली च रक्ताभानैर्ऋते शिरसियभेत् ॥८॥

राक्षस सत्ववाली स्त्रीको मछली और मांस प्रिय लगता है और देखनेमें अच्छी—लाल प्रभावाली ऊपरसे खूब क्रीड़ा करनेवाली (हंसी दिल्लगी करनेवाली) होती है। उसका नैर्ऋत दिशामें शिर कर मैथुन करना चाहिये ॥८॥

---

१ हेमचन्द्रः २ चक्रदत्त।

सुरामांस प्रियारौद्रामुदिताक्रूर भाषिणी ॥
वराहमेदः चौद्राभ्यां यभेन्मूलं प्रलिप्य च ॥६॥

यह राक्षस वाली स्त्री मद्य मांससे नित्य प्रेम रखनेवाली कभी जरासी देरमें—खुश होनेवाली कभी अत्यन्त क्रोध करने वाली होती है। शूअरकी चरबी और सहित मिलाकर शिश्नकी मूलमें लेपकर रमण करना चाहिये ॥ ६ ॥

भूतसत्वा च यानारी ह्रस्वजङ्घामहोदरी ॥
भक्ष्यभोज्य प्रियानित्य मीशान्यां शिरसियभेत्॥१०
अञ्जनं सैंधवं पिष्ट्वामधुना लिप्यमेहनम् ॥
प्राङ्मुखीना मुदक्पूर्वं यभेद्भूत प्रियावहः ॥११॥

छोटी छोटी जांघवाली बडे पेटवाली भक्ष्य और भोज्य पदार्थों से प्रेमरखने वाली भूतसत्वा (भूतसत्व वाली) स्त्री होती है इससे ईशान दिशामे शिर कर रतिकरना चाहिये । १० सेधा नमक और काला सुर्मा पीसकर सहित मिलाकर रति करना चाहिये ॥११॥

सर्पिणीव महावेगा विसर्पतिमनो जवात् ॥
कुवाक्यं सहते नैव प्रायः सत्याभिभाषिणी ॥१२॥
फुंफुं करोति क्रोधेन नागसत्वा च सास्मृता ॥
नागसत्वातु या नारीवायव्यां शिरसियभेत् ॥१३॥
नारिकेलधवद्गीर शालिपिष्ट गुडप्रिया ॥

कार्णिकारस्य निर्यासंकर्पूरं केतकीरजः॥ १४ ॥
केतकीपुष्परेणुं च च्चौद्रं चापि समाचरेत् ॥
सुरांदत्वा यमेत्तांतुप्राची शिरसिसं स्थिताम् ॥१५

सर्पणीकी तरह मन के वेगसे दौड़ने वाली हरकाम बेगसे करने वाली कुबाक्यों को नही सहने बाली प्रायः सत्यबोलने बाली ॥१२॥ क्रोध आनेपर फुंकार करनेबाली नागसत्वा स्त्री होती है। इसका वायव्य दिशामे शिर करके बिलाश करना चाहिये ॥१३॥ नारिकेलका और धवका दूध (रस) चावलका पिष्ट (शक्तु) और गुडको प्रियमानने वाली होती है। अमलतासका गोंद कपूर केबडे की धूल ॥१४॥ तथा केतकीके पुष्पकी रेणु, सहित और शराव मिलाकर लेपकर पूर्वमे मुखकर रतिकरना चाहिये ॥१५॥

यच्तसत्वातु या नारीनिर्लज्जाश्यामकामली ॥
मत्स्यमांस प्रियानित्यं गन्धपुष्प प्रियाभवेत् ॥१६॥
कर्पूरं कुंकुमं कुष्ठं पिप्पलीकाम संयुतम् ॥
रोचना चौद्रलिहांगी नैर्ऋत्यां शिरसियभेत् ॥१७॥
आजन्म दास्यतांयाति सत्यमेतन्न संशयः ॥
ज्ञात्वाय भेद्रति ज्ञस्स कल्याणं याति निश्चितम् १८

श्याम बर्ण बाली कोमल (मधुर) उच्चार्ण करने बाली मत्स्यमांस को प्रिय मानने बाली गन्ध (सुगंधित पुष्पोको प्रियमानने बाली

यक्ष सत्व बाली स्त्री होती है ॥१६॥ कपूर केशर कडुवा कूठ पिप्पली दमनक वा आमकी गुठली या राजाम्र मुम्बई आमका कच्चा फल गोरोचनको समभाग ग्रहण कर सहित मिलाकर शिश्नमे लेप कर नैर्ऋत्य दिशामे शिर करके मैथुन करना चाहिये। इससे स्त्री जन्म भरदस्यता कोप्राप्त होती है। यह बात सत्य है इसमे सन्देह नहीं है। जो इस बातोको जानकर रमण करता है वही रति शास्त्र का ज्ञाता है वह अवश्य कल्याणको प्राप्त होता है ॥१८॥

ॐ क्लींनम इतिमन्त्रं लक्षंजप्त्वा दशांशतःकुर्यात्॥
होमंपलाशकुसुमैः ध्यायेत्तस्याभगं पुरतः ॥ १६ ॥
दीपशिखाभंमन्त्रं प्रवेशयेत्तच्छिरः पद्मम् ॥
गलदमृतं योनिदलं ध्यायन्कान्तांवशी कुर्यात् २०

ॐ क्लींनमः इस मन्त्रका एक लाख जप करके पलाश (ढाक)के फूलोसे दशांसहवन करता हुवा उस स्त्रीके भगका ध्यान कर ॥१६॥ उसको अपने प्रत्यक्षकर दीपककी शिखाकीस मान प्रभा वाले यन्त्रके कमलरूपी शिरको प्रवेशकर ना चाहिये ॥२०॥

ॐ क्लींमेनामानय नयवशतां ॐ ततो ब्रूयात् ॥
तदनुच लक्षंनमएत दयुतंजप्त्वा दशांशतो जुहूयात् ॥ २१ ॥
किंशुक कदम्वकुसुमैः रात्रावेतां चरेत्पुरश्चर्याम् ॥
आकर्षयति प्रमदांवशयतितां विह्वली भूताम्।२२।

तत्पश्चात् ॐ क्लीं इस मूलमे लिखे हुये मन्त्रको बोलना चाहिये तत्पश्चात चक्षन्नमः इस मन्त्रको दस हजार जपकर ढाक और कदम्बके पुष्पोंसे रात्रिमे दशांस हवन करना चाहिये। इस प्रकार पुरश्चरण करनेसे स्त्रियोंका विकल होकर (जबरदस्ती अपने आप) आकार्षण होकर वशीकरण होता है ॥२२॥

ॐ ह्रींनम इतिलक्ष्यं रात्रौलक्षीकृतां पुरोध्यायन्।
जङ्घायोनौहृदये लालटदेशेचतां तूर्णम् ॥ २३ ॥
द्रावयते चाकर्षतिवश यतितेषांफलं क्रमतः।
ज्ञेयंसुधीभि रेतत्सप्त गुणोस्यात्स्मरःसाक्षात् ॥२४॥

ओंह्रीनमः इस मन्त्रसे जिस स्त्रीको वश करना हो तो उसको लक्ष्यकर अपने आगेकर ध्यान करता हुआ उसकी योनिमें हृदयमें ललाट देशमें २३ क्रमसे ध्यान करता हुवा एक लाख मन्त्र जपकर बहुत शीघ्र उस स्त्रीका आकर्षण (अपनी तरफको खीच लेना) वशीकरण-द्रावण कर सकता है। इसका फल उनजपने वालोंको क्रमसे होता है। इस मन्त्रसे सप्तगुणा कामदेवके स्थान (स्त्रियोंमें) आप स्वयं कामदेव रूप हो जाता है यह बात विद्वानों को जानना चाहिये।

मदमदमादय मादयहंसौ ह्रींरूपिणीं स्वाहा।
जप्त्वायुतंसहस्त्रं हुत्वावशयेच्च कुसुमेन ॥
ॐ कारपूर्वमेतत् कुसुमान्यपिरक्त वर्णानि ॥२५॥

मदमद आदि लेकर स्वाहान्त मूलमें लिखित ओंकार सहित मन्त्रको दशहजार जपकर एक हजारका लालवर्णके पुष्पोंसे हवन कर वशीकरण होता है ॥ २१ ॥

जप्त्वा ॐ ह्लल्लेखेमणि द्रवेकामरूपिणि स्वाहा ॥
लक्षंदशांशहोमस्तिलैःकृतः सिद्धि मावहति ॥२६॥
सूर्योदयेतथास्ते जापात्साध्वी मपीं द्राणीम् ॥
वशयति किमुलोकानां वनितास्तास्तु स्वयं यान्ति ॥ २७ ॥

ओं ह्लल्लेखे इस मूलमें लिखित मन्त्रको सूर्योदयके या सूर्यास्तके समय एक लाख जपकर तिलोंसे दशांस हवनकर सिद्धि को प्राप्त हो सकता है । साध्वीसती इन्द्रकी स्त्री (इन्द्राणी) को भी वश कर सकता है साधारण स्त्रियोंकी तो कोई बात ही नहीं साधारण बात है वे तो स्वयं प्राप्त हो जाती है ॥ २७ ॥

ध्यात्वा ॐ क्लींह्रींश्रींठं स्वाहा मन्त्रराज मिदम् ॥
नाड़ीगोरोचन मथसताड़बीजं च कन्यकापिष्टम् ॥
यस्यामूर्ध्निविकीर्यादनु धावतिसा तमेवनरम् ॥२८॥

ओं क्ली ह्रीं श्री ठं स्वाहा यह मन्त्र राजा है इस मन्त्रको जपकर जिस स्त्रीको वश करना होय उसका ध्यानकर नाडी (दूर्बा) गोरोचन-ताड़के बीज कन्याके हाथसे पिसाकर जिस स्त्रीके

मुख पर फेंक दिया जावे वह स्त्री उस पुरुषके बसमें होकर पीछे पीछे दौड़ती रहती हैं ॥ २८ ॥

विशेष बात–नाड़ी शाकका नाम भी नाड़ी शब्दसे व्यवहार करते है सो यहां नहीं करना चाहिये क्योंकि उसका नाम नाड़ी शाक है। यहां केवल नाड़ी शब्द हैं। केवल नाड़ी शब्द दूर्वाका वाचक हैं। इससे यहां दूर्वा लेना चाहिये।

चामुंडेहुलुहुलु चुलुचुलु वशमानयामुकीं स्वाहा॥
अभिमन्त्र्यसप्तवारं वशयति ताम्बूलदानेन॥२६॥

चामुण्डे इस मन्त्रसे सात वार ताम्बूलको अभिमन्त्रण कर जिसको ताम्बूल दिया जावे वह स्त्री वशीभूत होय ॥ २६ ॥

विशेष बात–मन्त्रमें लिखे हुये अमुकीके स्थानमें जिसको वश करना हो उसका नाम लेना चाहिये जैसे नारायणी नाम है तो नारायणी जपना चाहिये।

चामुंडेजयजम्भेमोहयवशमानयामुकीं स्वाहा।
दद्यात्पुष्पाणि पठन्यस्यैसातद्वशं याति॥
प्रणवादियुक्त मेतन्मन्त्रत्रयमीरितं ऋषिभिः॥३०॥

चामुण्डे इस मन्त्रको जपकर अमुकींके स्थान पर जिसको वश करना हो उसका नाम लगाकर (जैसे–नारायणी नाम है तो नारायणी यह शब्द लगाकर) उस स्त्रीको पुष्प देनेसे वह स्त्री वशमें हो जाती है। यह तीन मन्त्र ओंकार युक्त जपनेका विधान ऋषियोंने कहा है॥३०॥

शवमाल्यंवात्योत्थंग्राह्यं पत्रादिवाम हस्तेन ॥
अस्थि मयूर चकोरकयोरपिसर्वंविचूर्ण्य यस्यपदे ३१
यस्याः शिरसिच विकिरेदद्भुतमेतद्वशीकरणम् ॥
सदाचाररतः कुर्य्यान्मंत्रौषध विशारदः

हवासे उड़कर अलग गिरी हुई मुर्दंपर पड़ी हुई, माला या पत्र (पत्ते आदि) वायें हाथसे लेकर मोर या चकोरकी हड्डीका चूर्ण-कर मिलाकर जिसके शिरपर जिसके चरणोंमें वखेर देवे उसीका अद्भुत वशीकरण होता है। यह वशीकरण सदाचारसे चलने-वाला मन्त्रतन्त्र औषधोंका ज्ञाता होकर करे ॥३१॥

मृतमाल्यवात्यपत्रे मधुकर[1] पत्रे तथोर्ध्वदन्तयुगम्
भूतदिनेनिशिकन्यापेष्यं सर्वंस्मशानतले ॥३२॥
विकिरेद्यस्याश्चांगेसातूर्णंतद्वशं याति ॥
लोकजनानुग्रहतो योगोऽयंसूरिभिः कथितः ॥३३॥

मरे हुये (मुर्दे) की हवासे उड़े हुये ई माला या पत्ते या मधु कर मीठी जंमीरेके या भंगराजके पत्रमें मुर्देके ऊपरके दो दांत चतुर्दशीकी रात्रिमें श्मशानमें लेकर वहां कन्यासे पिसाकर रख लेवे। ३२ वह चूर्ण जिसपर फेका जावे वह स्त्री शीघ्र उसके वश हो जाती है। यह योग संसारके उपकारके लिये पूर्व मन्त्र शास्त्रि-योंने कहा है ॥ ३३ ॥

---

१ मधुकरोभृंगराजो मिष्ठ जम्बीरकेवा

गन्धक मनःशिलाभ्यांभूयः खण्डानिभावयेत्स्नुह्याः॥
पिष्ट्वाविशोष्य चैवं मधुयुक्तोऽयंध्वजालेपः॥३४॥
रमयन् वशयतिकांतां रिक्तप्रभवां नरस्यविष्ठा युक्
यस्याः शिरसिकिरेद्वा पृष्ठंतस्यैव सालगति॥३५॥

गन्धक—मैनशिलके चूर्णसे डंढा थूहरके टुकड़े-टुकड़े कर भावना देना अर्थात् डंडा थूहरके टुकड़े कर उसमें गन्धक मैनशिल मिलाकर सुखाकर खूब पीसकर सहितमें मिलाकर अपनी ध्वजा-पर लेपकर ३४ रमणकरनेसे वह स्त्री वशीभूत होती है। यदि उसमें अपनी विष्टा या रक्त मिलाकर जिसके शिरपर डाल दिया जावे वह स्त्री उस पुरुषके पीछे लग जाती है।

रिक्त प्रभवा वा रिक्त अलग हो गया है, प्रभव स्वभाव जिसका अर्थात् जरा भी न चाहनेवाली स्त्री वश होकर उसके पीछे लग जाती है॥३५॥

गजनाशित नरहृदयजिह्वा दृग्लिङ्ग नासिकामांसैः
रात्रौपुष्यसुयोगे शिवालयेमानुज कपाले ॥ ३६ ॥
साधितमेतत्कज्जल मबलायाः स्याद्वशीकरणे ॥
भक्षणपानस्पर्शन विधिषु सुविज्ञः समायु-
ञ्ज्यात् ॥ ३७ ॥

१ रक्तप्रभवाका कुछ भी अर्थ यहां नहीं लग सकता है। इसलिये रिक्त प्रभवां पाठ किया है।

हाथीसे मारे हुवे मनुष्यका हृदय जीभ आंख नाकका मांस लेकर रात्रिमें पुष्य नक्षत्रके दिन सुन्दर योग होनेसे अर्थात रविवार पुष्य नक्षत्र होनेसे-शिवालयमें बैठकर घृत डालकर मनुष्यके कपाल (खोपड़ी) में ३७ कज्जल उपाड़कर धर लेवे। वह कज्जल जिसके लगा दिया जावे और वह मांसादि जिसको जरासे भक्षण करा दिये जावें-पान करा दिये जावे स्पर्श करा दिये जावे वह वशीभूत हो परन्तु इस विधिको केवल सुविज्ञही कर सकता है अन्य नहीं ॥३८॥

चटको दरस्य मध्यान्नि ष्काश्यान्त्राणि तदु परेबीर्यम् ॥ मूत्रं चापि निदध्यात्स कोरके सम्पुटीकुर्यात् ॥३८॥ चुल्ह्यां सप्तदिनानिच विपचेत्त द्भस्म संसिद्धम् ॥३६॥

चटक (चिड़ा पक्षी) के पेटसे आंत निकालकर उसमें अपना वीर्य्य-मूत्र मिलाकर शराव सम्पुट मे धर कर ॥३८॥ नित्य प्रति ७ दिन तक चूल्हे पर चढ़ाकर भस्मकरे जिसको जरासी पीनेकी या खानेकी वस्तुमें देदी जावे वह उसी समय वश हो ॥२६॥

नन्दिकीट मथचूर्णये द्रु धस्तत्र वीजमपि पातये न्निजम् ॥ गुञ्जिकामथ विपिष्ययो जपेत्तेनतांवश मुपानये द्ध्रु वम् ॥ भोजयेच्च यदिवापि पायये-न्मस्तके ऽथयदिवापि पातयेत् ॥ अद्भुतेन विधि-नानरः परां मोहयेदपि बशिष्ठ कामिनीम् ॥४०॥

नन्दि कीट नन्दी वृक्ष* (धवके कीड़े)का चूर्ण कर उसमें अपना वीर्य्य मिलाकर-सफेद गुंजा (घुँघची) पीसकर मिलावे उसको भक्ष्य वा पानीय पदार्थमें देनेसे या मस्तक पर फेकनेसे साधारण स्त्रीको वश करना तो सामान्य बात है। परन्तु वशिष्ठकी स्त्रीको भी वश कर सकता है । यह अद्‌भुत विधि है ॥ ३९ ॥ ४० ॥

सहदेवी पद्मदलं पुनर्नवासारि संयुक्तम् ॥
साधित कल्कैः सिद्धं नयनाञ्जन मद्भुतं वशकृत् ॥४१

इति श्रीकुचिमार तन्त्रे वशीकरणा धिकारे तृतीयः पटलः ॥

सहदेवी-कमलपत्र-पुनर्नवा, सारि मिलाकर खूब कल्क (चटनी) कर पुनः काजलके समान महीनकर अपने पास रखना चाहिये इस काजलको जो लगाता है, वही वश हो जाता है। यह अञ्जन अद्भुत वश करने वाला है ॥ ४१ ॥

इतिश्री जयपुर राज्यान्तर्गत भामोद ग्रामनिवासि हनुमत्पुत्रायुर्वेदमहामहोपाध्याय रसायन शस्त्र्यायुर्वेदाचार्य्य भागीरथस्वामिकृतायां भागीरथी भाषाटीकायां कुचिमारतन्त्रस्य वशीकरणाधिकारे तृतीयः पटलः समाप्तः

सारी शब्द सातलाका वाचक है यहां सारि ह्रस्व इकारान्त हैं। यदि सातला डाल दिया जावे तो नेत्र फूट सकता है। इसलिये यहां सारिवायुक्तं पाठ होना चाहिये अर्थात अनन्त मूलका स्वरस डालना चाहिये

---

*नन्दकी-स्त्री पिप्पल्यां श॰ चिं॰

अथवृष्यम्

अथेदमभि धास्यामि वृष्यंबिविध लक्षणम् ॥
अतिव्यायाम सत्वानां स्वभावक्षीण रेतसाम्॥१॥

इसके पश्चात् अत्यन्त कसरत करनेवाले तथा स्वभावसे ही क्षीण वीर्य्य जिन्होंका उन्हके लिये विविध (नाना प्रकार) का वृष्य पदार्थका वर्णन करता हूं । १

प्रमदा स्वति रिक्तस्य हीन शुक्रस्य सर्वदा ॥
तन्निमित्तं भवेत्तस्मा द्द्याद्वृष्यकरं स्वयम् ॥२॥

सर्वदा स्त्रियोंके द्वारा छोड़े हुवे हीन वीर्य्य पुरुषोंके निमित्त यह वृष्यकर है । इसलिये वृष्यका वर्णन किया जाता है २

स्वयंगुप्तां तिलान्माषा न्वदरीशालि पिष्टकम् ॥
अजाक्षीरेण संपेष्य घृते पूपलिकां पचेत् ॥३॥

कोचके बीज—कालेतिल-उडद वेरके गुठलीके भीतरकी मज्ज़ा—(मिगी) चावलोंका चूर्ण समभाग लेकर बकरीके दूधमें पीसकर घृतमें पूवा (गुलगुले) बनाकर ॥ ३ ॥

अंगुष्ठमात्रं तस्यास्तु भक्षयित्वा पयः पिबेत् ॥
नच पद्भ्यां स्पृशेद्भूमिं वृद्धोविशति बेगबान्॥४॥

अङ्गुष्टमात्र मोटी और बड़ी पूपालेका (गुलगुलेका टुकड़ा) खाकर ऊपरसे दुग्ध पानकर खाटपर बैठ जावे और अपने पैरोंसे पृथ्वी

का स्पर्श न करे तो वीर्य्य स्तम्भन हो। इस प्रयोगसे वृद्ध भी तरुण होता है ॥ ४ ॥

इक्षुर[1] गोक्षुरकस्यच मूलं वानर रोमफलं[2] तिल-माषा चूर्णमिदं पयसा सहलेह्यो यस्यगृहे प्रमदा शतमस्ति ॥५॥

तालमखाने–बड़े गोक्षुर कीजड–वानररोमफला कोचके बीज तिल–माष (उड़दों) को समभाग लेकर चूर्णकर दूध मिलाकर चाटना चाहिये। अर्थात् दूधमें मिलाकर खाना चाहिये जिसके घरमें १०० सव स्त्रियां हो

विशेष वात—कितने ही वैद्य वानर शब्दसे कोच बीज रोम-फल शब्दसे भवफल सेव (ढेढस टिंडा) का ग्रहण करते हैं। यह वात अशुद्ध हैं। केवल वानर शब्द, कोचका वाचक नहीं हो सकता, इसलिये वानर रोमफला नाम कोचका है अतः यहां वानर रोम-फला पाठ होना चाहिये—वानर रोमफल पाठ अशुद्ध है।

चूर्णं विदार्या लवणं यवा माषा स्तथैवच ॥
सर्पिर्वाराह मेदश्च तिलालोहित शालयः ॥६॥

विदारीकंदका चूर्ण–सेधालवण यवमाष (उड़द) घृत-वाराह (शूकर) की चर्वी तिल–लाल चावल ॥ ६ ॥

एतैः पूपलिकां कृत्वा भक्षयित्वा पयः पिवेत् ॥
सहस्रं यातिकन्तानां सादरं प्रतिवासरम् ॥७॥

१ इक्षुरकः काशः शरः इक्षुः कोकिलाक्षः २ रोमफलंभवम्

इन सबका समभाग चूर्णकर पूवा उतारकर खाकर ऊपरसे दूध पीना चाहिये। इससे हजार स्त्रियोंके पास भी आनन्द पूर्वक प्रत्येक दिन जा सकता है ॥ ७ ॥

उच्चटा मथ बिदारिका मृतां
माष चूर्णसतिलां सशर्कराम् ॥
योनरः पिवति दुग्ध मिश्रिताम्
प्रत्यहं व्रजतियोषितां शतम् ॥८॥

उच्चटा (गुंजाकी जड़) विदारीकंद अमृता (गुर्च) उड़द-तिल-सब समभाग लेकर पीछे सबके बराबर सर्वसम शर्करा मिलाकर दूधमें मिलाकर जो मनुष्य पान करता है वह प्रतिदिन शत-स्त्रियोंके पास जा सकता है ॥ ८ ॥

माष पिप्पलि शालीनां यब गोधूम मेबच ॥
सूक्ष्म चूर्णी कृतोलेहः घृते पूपलिकां पचेत् ॥९॥
भक्षयित्वा पयः पीत्वा शर्करा मधु संयुतम् ॥
शरश्च एक त्रिंशद्गत बाराण्नि रन्तरम् ॥१०॥

उड़द—छोटी पीपल—चावल जव गेहूंके घृतमें पूवे बनाकर इन पूवोंको खाकर शर्करा और मधु मिला कर दूध पीनेसे २१ बार स्त्रियोंके पास जानेपर भी निरन्तर काम बाण तैयार ही रहता है ॥ १० ॥

विदारी यवकं शालिः स्वयं गुप्ता फलानिच ॥
यवाश्च सहगोधूमाः पिष्ट्वा चीरेविमिश्रयेत् ॥११
शीतं मधु घृताक्तंतु भुक्त्वा भवति बीर्य्यवान् ॥
भुक्तोपरि यदाजीर्ये त्तदा भवति मैथुनम् ॥१२॥

विदारीकंद-यवक (इन्द्रयव) चावल—कोचके बीजोंकी मिगी-जव गेहूं-समभाग लेकर दूधमें मिला देवे ॥ ११ ॥ और शीतल (अग्निसे विना तपाये) सहित घृत मिलाकर खानेसे मनुष्य वीर्य्य-वान होता है। खानेके पीछे जब खाया हुवा पचने लगे तब उस समय मैथुन करना चाहिये ॥ १२ ॥

निर्मलाश्चतिलाञ्शुद्धान् बिदारीं शर्करां तथा ॥
स्वयंगुप्तातिलैः सार्धंघृते पूपलिकांपचेत् ॥ १३ ॥

सफेद साफ किये हुवे तिल-विदारीकंद-शर्करा-कोचके बीजोंका आटा मिलाकर घृतमें पूवा पकावे ॥ १३ ॥

मधुमांस फलैश्चैव सहारीक्षु रसैस्तथा ॥
संस्टष्टंतुपिवेदेत च्छतवेगं भविष्यति ॥ १४ ॥

मधु (मद्य) मांस, फल ईखका रस मिलाकर यदि पुरुष पान करे तो शत बार स्त्रीके पास जानेकी शक्ति होय ॥१४॥

विशेष बात यह है कि सहारीक्षु रसैस्तथा इसका ठीक अर्थ नहीं हो सकता ; क्योंकि आरीक्षुया अरिक्षु शब्द कहीं नहीं मिलता है। इसलिये यहां सहक्षुर रसैस्तथा ऐसा पाठ करना

चाहिये, जिसका अर्थ गोक्षुरका स्वरस होता है। उसीको यहां ग्रहण करना चाहिये।

वस्ताण्ड सिद्धे पयसि भाविता नसकृत्तिलान् ॥
यःखादत्यसितान् गच्छेत्सतु स्त्रीणांशतंतदा ॥१५॥

बकरेके अण्डकोष डालकर पकाये हुवे दूधसे भावना दिये हुये तिलोंको जो खावे वह शत (सौ) स्त्रियोंको तृप्त कर सक्ता है ॥१५॥

वृषणाक्षीर सर्पिभ्यांपक्वं मासंतुभक्षयेत् ॥
मधुमांस रसंपीत्वा शतवेगंसगच्छति ॥ १६ ॥

बकरेके वृषणोंको दूध और घृतमें पकाकर मास भर खावे और मद्य और मांस रसका पान करे तो शत (सौ) बार स्त्रीके पास जा सकता है ॥१६॥

वस्ताण्डसिद्धक्षीरेतु भावितानसकृत्तिलान् ॥
अद्याच्च पयसाचूर्णमवला शतबल्लभः ॥ १७ ॥

बकरेके वृषण डालकर पकाए हुवे दूधमें थोड़ेसे तिल डालकर दूधके साथ चूर्णको खाना चाहिये, इससे वह पुरुष सौ स्त्रियोंका प्रिय होता है ॥१६॥

कृष्ण सैन्धवसंयुक्तं बस्ताण्ढं घृतसंयुतम् ॥
भक्षयित्वापयं पीत्वापूर्वोक्तं मधुनासह ॥ १८ ॥

काला और सैंधव लवण मिलाकर बकरेके अण्डकोषमें घृत

मिलाकर खाना, पीछे सहित मिलाकर पूर्वोक्त विधिसे दूध पीना चाहिए ॥१८॥

अश्व गन्धस्यमूलानि गवांक्षीरेण नित्यशः ॥
पीत्वाचसम्यगेतत्तु वृद्धोषोडषवेगवान् ॥१६॥

असगन्धकी जड़के चूर्णको गौके दूधमें मिलाकर पीकर सब प्रकारसे वलवान् होता है। और वृद्ध भी सोलह वर्षका वेगवान् (वेगयुक्त) जवान होता है ॥१६॥

आमलक्याविदार्याश्च चूर्णंस्वरस भावितम् ॥
शर्कराक्षीर सर्पिर्भ्यां प्राश्य सुक्षीरमाचेरत् ॥२०॥

आमलाके चूर्णसे आमलाके रसकी अनेक भावना देकर तथा बिदारी कंदके चूर्णको बिदारी कन्दके स्वरसकी अनेक भावना देकर शर्करा दूध घृत मिलाकर खाकर ऊपरसे दूध पीना चाहिये। इससे वृद्ध भी तरुण होता है ॥२०॥

स्वयंगुप्तस्यबीजानि तथा गोक्षुरकस्य च ॥
चूर्णद्वयं पिवेत्साधंपयसाशर्करान्वितम् ॥२१॥

कोंचके बीजका तथा बड़े गोक्षुर चूर्णको फाककर शर्करा मिश्रित दूध पीना चाहिये। यह योग भी वृद्धको तरुण बनाने वाला है ॥२१॥

आमलक्यारसे चूर्णंमाषाणां प्रक्षिपेन्नरः ॥
अतीतेसप्तरात्रे तु शर्करा मधु संयुतम् ॥२२॥

आमलेके स्वरसमें उडदोंका आटा गेरकर धर देवे सात रात्री बीत जाने पर शर्करा और सहित मिलाकर घृतमें पूवा बनाकर खाना चाहिये ॥ २२ ॥

विदार्याश्चूर्णमसकृत्स्वरसे नैव भावितम् ॥
स्वगुप्तमाष संयुक्तं घृते पूपलिकां पचेत् ॥२३॥

विदारीकंदके चूर्णमें विदारी कन्दके स्वरसकी वार वार अनेक भावना देकर कोचके बीज तथा उडदोंका चूर्ण मिलाकर पूवा (गुलगुला) पकाकर खाना चाहिये । उपरसे शर्करा संयुक्त दूध पीना चाहिये ॥ २३ ॥

माषचूर्णपलंचैव मधुना सह सर्पिषा ॥
अनुपानं पयः पीत्वावृद्धः षोडशगोभवेत् ॥२४॥

उड़दका चूर्ण एक पल (४ तोला) सहित और घृत असमान भाग मिलाकर दूध और शर्कराके साथ खाना चाहिये इससे वद्ध पुरुष १६ वर्षका युवा हो जाता है ॥ २४ ॥

मधुना सर्पिषायुक्तं मधुकं सकलं समम् ॥
लीढ्वानिपीय तत्पश्चात् पयः पीत्वा शतं व्रजेत् ॥२५॥

सहित घृत मिलाकर इन दोनोंके बराबर मुरहटी मिलाकर चाटना चाहिये । ऊपरसे दूध पीकर शत (सब) स्त्रियोंके पास मनुष्य जा सकता है ॥ २५ ॥

स्वर्णमाक्षिकलोहं च पारदश्च शिलाजतु ॥
पथ्याविडङ्ग धत्तूरविजया जातिपत्रिकाः ॥ २६ ॥
अश्वागन्धा गोक्षुराणां द्रवैर्भाव्यं पृथक् पृथक् ॥
सप्तघस्रं तु वल्लैकं मध्वाज्याभ्यां लिहेत च ॥२७॥

सोनामक्खीकी भस्म-लोह भस्म-पारद भस्म-अभावमेंरस सिन्दूर-शिलाजीतमें हरड़ वायविडंग-धतूरा-भांग जावित्री-२६ असगन्ध गोक्षुरके स्वरसोंसे भिन्न भिन्न भावना देकर धर देवे। उसमेंसे एक बल्ल (तीन रत्ती) प्रमाणमित लेकर उसमें सहित-घृत मिलाकर चाटना चाहिये ॥ २७ ॥

वस्ताण्ड साधितेदुग्धे तिलान्कृष्णान्विभावयेत् ॥
शतवारं भावनास्यात् शतसंख्याः व्रजेत् स्त्रियः २८
अनुपानं सितादुग्धं केवलैव सिताथवा ॥
स्तम्भनं वृष्यकं चैतत् सुखसन्तान कारकम् ॥२८॥

बकरेके वृषणोंको डालकर पकाये हुवे दूधमें भिगो भिगोकर काले तिलोंको १०० बार छाहीमें सुखाकर—खानेसे १०० स्त्रियोंके पास जा सकता है ॥ २८ ॥ इसका अनुपान मिश्री मिलाकर दुग्ध पान करना चाहिये—अथवा केवल मिश्री खाना चाहिए यह स्तम्भन कर्ता है—वृष्य है दोनोंको सुखप्रद और सन्तति देने वाला है ॥ २९ ॥

विदारिका गोक्षुरकं सिताज्य मधुसंयुतम् ॥
लीढ्वानिपीय दुग्धं च नारीणां शतमावहेत् ॥३०॥

विदारीकंद-गोक्षुर शर्करा-घृत मधु मिलाकर चाटना चाहिए । ऊपरसे दुग्धपान करना चाहिये । इससे १०० स्त्रियोंके पास जाने की शक्ति पुरुषको प्राप्त होती हैं ॥ ३० ॥

स्वरसेनधात्रीचूर्णं बहुवारं विभावयेत् ॥
सिताज्यं मधुसंयुक्तं पयः पीत्वा शतंव्रजेत् ॥३१॥

आमलेके चूर्णमें आमलेके स्वरसकी बहुत सी भावना अनेक बार देकर शर्करा सहित मिलाकर खाना चाहिये । ऊपरसे दूध पीना चाहिये । इसको खाकर भी १०० स्त्रियोंके पास जानेकी शक्ति आ जाती है ॥ ३१ ॥

इदंमहर्घं स्त्रैणानां बिहाराथ मुदाहृतम् ॥
नराणामल्पशुक्राणां भिन्नानां च प्रजार्थिनाम् ३२
इतिश्री कुचिमारतन्त्रे वृष्याधिकारे

चतुर्थः पटलः ॥

यह प्रयोग महर्घ (बड़ी कठिनतासे प्राप्त होने योग्य) है यह अल्प वीर्य्य युक्त प्रजार्थी (सन्तानकी इच्छा रखनेवाले) स्त्रियोंसे भिन्न रहिनेवाले स्त्री सम्भोगकी इच्छा करने वाले पुरुषोंके बिहार (क्रीड़ाके) लिए वृष्याधिकारका वर्णन किया है ॥ ३२ ॥

इतिश्री जयपुर राज्यान्तर्गतभामोद ग्राम निवासि हनुमत्पुत्र रसायन शास्त्र्यायुर्वेदमहामहोपाध्याय भागीरथ स्वामि कृतायां भागीरथी भाषाटीकायां कुचिमार तन्त्रे वृष्याधिकारे चतुर्थः पटलः ।

द्रावणम् ।

कर्पूरं टंकणं चापि भवबीज समन्वितम् ॥
मधुना लिङ्गलेपोऽयं तरुणीं द्रावयेद्रुतम् ॥ १ ॥

कर्पूर-सुहागा-पारा-समभाग लेकर सहित मिलाकर शिश्नपर लेपकर सम्भोग करनेसे स्त्रीका द्रावण होता है ॥ १ ॥

यहां द्रुताम् पढ़ना चाहिये इसका अर्थ यह है कि एक वार द्रुत हुई पुनः द्रुत होती है।

केवलं टंकणंचापि नारीद्रावण मद्भुतम् ॥
चिञ्चा मधुसमायुक्ता गुड़युक्ताऽथवात्रयम् ॥ २ ॥
द्रावणेपरमोयोगो नारीसौख्य प्रदायकः ॥
विख्यातमल्लो नारीणां रामा मण्डित पण्डितः ३

केवल सुहागा ही मधु मिलाकर लगानेसे स्त्रीका अद्भुत द्रावण होता है इमलीका गूदा सहित-अथवा गुड़ और इमलीका गूदा-किम्वा इमलीका गूदा गुड़-सहित मिलाकर श्निश्नपर लगाकर २ रति करनेसे स्त्रियोंको द्रावण कर्ता तथा परम सुख देने वाला है

स्त्रियों करके विभूषित पण्डित तथा स्त्रियोंमें विख्यात पहलवान कहाता है॥ ३॥

पिप्पली मधुधत्तूरं लोध्रं मरिचमेवच॥
रजसोद्रावणोयोगो नारीगर्भ विनाशकम्॥ ४॥

पीपल-मुरहटी-धतूरा-पठानीलोध-कालीमिर्च समभाग मिलाकर शिश्नमें लगाकर रति करनेसे स्त्रियोंके रजको द्रावण करता है— और गर्भका विनाशक है॥ ४॥

रक्तवानरलिङ्गञ्च पारदं चौद्रमेवच॥
लेपोऽयंकामिनां कान्ता सौख्य प्रीतिकरः परः॥५॥

लाल वानर (वन्दर) का लिङ्ग पारा-सहित पीसकर लेप करनेसे सम्भोग करनेपर स्त्रियोंके सौख्य और परम प्रीति उत्पन्न होती है॥ ५॥

सैन्धवं मधुसंयुक्तं पारावत मलान्वितम्॥
रजसोद्रावणोयोगो मुनिभिः परिकीर्तितः॥ ३॥

सेंधानमक सहित कवूतरकी बीठ मिलाकर लेपकर सम्भोग करनेसे स्त्रियोंके रज़का पतन होता है। यह योग मुनियोंने कहा है॥ ६॥

स्तम्भनम्।

पद्मकिञ्जल्क संयुक्तां घृतचौद्र समन्विताम्॥
सहदेवीं च संपेष्य नाभौ धृत्वाशतं व्रजेत्॥ ७॥

कमलकीं केशर घृत सहित सहदेवीको पीसकर अपनी नाभीमें लगाकर सौ स्त्रियोंके पास जा सकता है॥ ७॥

सितशरपुंखजटावट दुग्ध विमर्दितम् ॥
एकबीजोद्भवस्थाने कुर्यात्तस्मिन् करञ्जके ॥ ८ ॥
यभमानश्चात्ममुखे धारयेत्तत्करञ्जकम् ॥
स्तम्भनं परमंधत्तेरमणीं रमतेभृशम् ॥ ९ ॥

सफेद फूलके सरफोंकेकी जड़को वटके दुग्धसे घोटकर गोलीकर अङ्कुर निकलने वाले करञ्जुके स्थानमें स्थापनकर फिर करञ्जके मुख को बन्ध कर यदि रतिकर्ता अपने मुखमें धारण करे तो ८ परम स्तम्भन होता है और बार बार रमण करनेकी शक्ति प्राप्त होती है।

सितशरपुंखामूलं पारदरससहित माननेनिहितम्॥
एक करञ्जकबीजान्तस्थं बीजं विधारयति ॥१०॥

सफेद शरफोंकाकी ज़ड़को पारदके साथ घोटकर एक करंज-फलके भीतर धरकर रति कर्ता मुखमें धारण करे तो वीर्यका स्तम्भन होय॥ १०॥

नरदक्षिण हस्तोत्थै रिभशुण्ड समुद्भवैः॥
करभाश्व पुच्छसंजातै रोमभिः कोलदंष्ट्रकम् ॥१०
ग्रथित्वा धारयेद्धस्तेचणां बीर्यंन मुञ्चति ॥
गुप्तोऽयं परमोयोगो कुचिमारेण निर्मितः॥ ११ ॥

*मनुष्यके दक्षिण हाथसे उखाड़े हुवे—हाथीकी शूंडके बाल करभ (ऊंट) घोड़ाकी पूंछके बाल कोल-(शूकर) की ड़ाढ मिलाकर खूब गूथकर हाथमें धारण करनेसे नाम मात्र भी वीर्य्य-पतन नहीं होता। यह परम गुप्त योग है। इसको कुचिआर ऋषिने निर्माण किया है॥ ११॥

सप्तपर्णास्यबीजं वा मुखेधृत्वा यथासुखम्॥
रममाणो रेतसश्चस्तम्भं धत्तेघटीद्वयम्॥ १२॥

छतिवनके वीजको मुखमें धरकर रमण करनेसे दो घड़ी तक वीर्य्यका स्तम्भन होता है॥ १२॥

लेपनम्॥

स्नुहीदुग्धे तथाछागी दुग्धेलज्जालु मूलकम्॥
विमर्द्य पादं बिलिपेत् बीर्यच्यावंजयेदसौ॥१३॥

सेहुराड-(डंड़ाथूहर) के दूधमें वकरीका दूध मिलाकर उसमें लज्जावन्तीकी जड़को घोटकर रतिकर्ता अपने चरणोंमें लगावे तो वीर्य्य पतन नहीं होवे १२

अथवा वारुणीमूलं पेषयेदजमूत्रके॥
ध्वजालेपेन सम्भुञ्जन् वीर्यच्यावं जयेदसौ॥ १४॥

अथवा इन्द्रायतकी जड़को वकरेके मूत्रमें पीसकर ध्वजामें लेपकर सम्भोग करनेसे वीर्य्यका पतन नहीं होता किन्तु स्तम्भन होता है॥ १४॥

तैलं पुनर्नवा चूर्णैः स्सिद्धं कौसुम्भमेववा॥
ध्वजां वा चरणांबापि मर्दयेन्नक्षरणां च्यवेत्॥१५॥

पुनर्नवाका चूर्ण डालकर सिद्ध किया हुआ कौसुम्भके तेलको ध्वजा (शिश्न) में चरणमें मर्दन करनेसे वीर्य्यस्त्राव नहीं होता है किन्तु स्तम्भन होता है॥१५॥

सहदेवीमधुतिल महिषी घृतसंयुतम्॥
सितपंकज किञ्जल्कं चटकाण्डेन मर्दयेत्॥१६॥
नाभिलेपनतोवापि पद्लेपा द्थापिवा॥
रममाणः शतंनारी वीर्यंधत्ते नरश्चिरम्॥१७॥

इतिश्री कुचिमारतन्त्रे बृष्याधिकारे
पञ्चमः पटलः॥

सहदेवी मधु (मुलहटी) काले तिल भैंसका घृत सफेद कमल की जड़ चिड़ेके अण्डेके रससे मर्दनकर १६ नाभिमें लेप करनेसे और पैरोंमें लेप करनेसे १०० स्त्रियोंसे रमण करनेपर भी वीर्य्यस्त्रा नहीं होता॥१७॥

इतिश्री जयपुर राज्यान्तर्गत भामोद ग्राम निवासि हनुमत्पुत्रा युर्वेदमहामहोपाध्याय रसायन शास्त्र्यायुर्वेदाचार्य्य कृतायां भागीरथी भाषाटीकायां कुचिमारतन्त्रे वृष्याधिकारे पंचमः पटलः समाप्तिः

कन्याकरणम्

मधुर्मनः शिलाचापि श्वेतानि मरिचानिच ॥
कुष्ठं मत्स्यस्यपित्तश्च तथासौराष्ट्रलोचनम् ॥१॥
कोकिलस्य च वीजानि कापित्थं मूलमेव च ॥
घृतेन योनिमालिप्य कन्याकरण मुत्तमम् ॥ २ ॥

सहित मनशिल-सफेद मिर्च कडुवाकूठ मत्स्यका पित्त सौराष्ट्र (कुन्दरुकागोंद (लोचन सफेद जीरा) तालमखानेके वीज-कयथाके मूलकी छालको महीन पीसकर घृत मिलाकर योनिमें लेप करनेसे उत्तम कन्या करण होता हैं ॥२॥

१ सौराष्टः—कुन्दरुकं लोचनं—जीरकम् ।

गोश्रृङ्ग मजश्रृङ्गं च मनोगुप्ता[१] समन्वितम् ॥
हारिद्रे णजले लिप्तं भर्तृ तृप्तिकरंभवेत् ॥३॥

गोश्रृङ्ग, [ववूलकीफली] अजश्रृङ्ग [मेढाशिङ्गी]

मनोगुप्ता मैनशिलका चूर्णकर हल्दीके जलमें मिलाकर लेप कर रति करनेसे कन्या करण होता है। यह पतिको तृप्त करने वाला लेप है ॥३॥

गोर श्रृङ्गका अर्थ-गौका शींग, अज शृङ्गका अर्थ वकरीका शींग टीकाकारोने किया है, वह बिलकुल अशुद्ध है और अज शृंग शब्द भी अशुद्ध है अज शृंगी मेष शृंगीका वाचक है। अज शृंगी पाठ होना चाहिये अनेक विद्वानोंने मनो गुप्ता या मनोव्हा शब्दका अर्थ

१ मनोव्हा इत्यपि पाठ स्तत्रापि मनशिलाया ग्रहणम् ।

कोचकीफली किया है। वह भी अशुद्ध है मनो गुप्ता और मनोव्हा शब्द मनश्शिलाका वाचक है।

लोध्रंकुमुदकन्दंच कोकिलाहेममाक्षिकम् ॥
वर्तिंच लेपयेद्द्योनौ सुगन्धिः कन्यकाभवेत् ॥४॥

पठाणीलोध–कुमदका कन्द (नीलोफरकी जड़) तालमखाना सुवर्ण माक्षिक मिलाकर वर्तिका बनाकर रख लेवे–अपेक्षा पड़ने पर पानीमें घिसकर लेप करनेसे स्त्री सुगन्ध युक्त कन्यका बन जाती है ॥ ४ ॥

लोध्रंकार्पास पत्रंचबदरीबीज मेवच ॥
हरिद्रां मधुनालिप्यकन्याभवति नित्यशः ॥ ५ ॥

लोध पठाणी-कपासके पत्ते वेरकी मिगी हल्दी समभाग चूर्णकर सहितके साथ मिलाकर नित्य लेप करनेसे नित्य कन्या रहिती है ॥५

कृष्णानिर्गुण्डि पुष्पाणामम्बुतैलेन बुद्धिमान् ॥
श्वेतलाच्चारसंग्राह्यं चतुःप्रस्थं सुशोभितम् ॥६॥
क्वाथयेन्मतिमान् सम्यक्प्रस्थंनिर्गुण्डि सम्भवम् ॥
चतुर्भागावशिष्टंतु कषायपरिमाणतः ॥ ७ ॥
सुविशोष्य तिलान् कृष्णान् भावयित्वातुतद्रसे ॥
(संशुष्कांश्चतिलान् कृष्णान्) सूतापितांस्तिलान् कृत्वा ॥

विद्वान् सम्यक् प्रयोजयेत् ॥ ८ ॥
प्रतिगृह्यतिलाभक्ष्या त्रिदिनेनैव भक्षयेत् ॥
कपिलाघृतसमंतैलं पूर्वोक्ते नैवभावितम् ॥ ९ ॥
योनिमध्ये चदातव्यं सममेकतिलीकृतम् ॥
कन्याकरणमत्यन्तं योनिशौचमनामयम् ॥ १० ॥

काले फूलवाले सम्हालूका ऽ१ एक सेर स्वरस अलग धर लेना पीछे पीपलकी लाख ऽ१ जल ऽ१६ सेर लेकर गरम करे उसमें स्वेत (सुहागा) पीसकर धीरे धीरे डाल .ताजावे–शेष ऽ४ चार सेर जल रखकर पीछे निर्गुण्डिका स्वरस ऽ॥ तिलका तेल ऽ॥ गेरकर सम्हालूके पत्तोंका क्वाथ जलाकर तेलकी विधिसे तेलबना लेना चाहिये यह तेल योनिमें। लगानेमें काम आता है। इससे कन्या करण होता है।

तिल बनानेकी विधि

नीले फूल वाले सम्हालूके पत्तोंका स्वरस ऽ१ पीपलकी लाख ऽ१ जल ऽ१६ गेरकर सुहागा चौकिया ऽ- पीसकर धर लेवे वह जरा जरासा बुरकता जा वे जल ऽ४ रखकर तिल ऽ॥ में भावना देकर तिलोंमें गेरकर (सुखाकर) धर लेवे। वह ५ तोला नित्य ३ दिन तक स्त्रीको खाना चाहिये।

पूर्वोक्त तिल तेल बनाया हुआ—और कपिला गौका घृत समभाग मिलाकर योनिके भीतर लगावे। इन दोनों प्रयोगोंसे

अत्युत्तम कन्या करण होता है। और योनि शुद्ध और रोगरहित होती है ॥१०॥

विशेष बात—यहां पाठ और प्रयोग विधि बिलकुल अशुद्ध है। अनेक पुस्तकोंको देखा गया परन्तु प्रायः वह भी अशुद्ध ही मिली।

रसोभूपीलुमूलञ्च पिप्पलीतण्डुलंतथा ॥
एभिर्लेपःप्रयोक्तव्यो नारीणां चित्तहारकः ॥ ११ ॥

पारा भूपीलु (पीलु) का मूल-पीप्पली-चावल समभाग लेप करनेसे स्त्री कन्याहोती है। यह लेप स्त्रियोंके चित्तको हरने-वाला है ॥ ११ ॥

विशेष वात—भूपीलु शब्द किसी निघंटुमें नहीं मिलता है। किसीने पीलुकी जड़का रस लिखा है। मेरी समझमें जिस प्रकार बदरी भूमि बदरी शब्द हैं। उसी प्रकार महापीलु और पीलु शब्द है। उसी प्रकार छोटे पीलुके वृक्षका नाम भूपीलु हो सकता है। इस कल्पनाके शिवाय हमारे पास कोई प्रमाण नहीं।

एक द्वितीय अर्थ रस पारद-भूपाल (मूषकमांस) मूल-पिपरा मूल-पीप्पली चावल समभाग लेकर लेप करना चाहिये ॥ ११ ॥

पित्तंतुकाकविष्ठाचश्वानशेफ स्तथैवच ॥
स्वयंगुप्ताफलंचैव मूलन्तत्तरुत स्त्वचः ॥ १२ ॥
त्रिफलानागरंचैव लोध्रंचसमभागशः ॥
किञ्चित्कटुकरोहिण्या मधुनासहयोजयेत् ॥१३॥

पित्ता (हरदी) काककी विष्टा कुत्तेका शेफ-स्वगुप्ता फल लज्जालुके जड़की छाल या लजावन्तीक बीज त्रिफला (हरड़ बहेड़ा आमला) सोंठ-लोध-समभाग थोड़ीसी कुटकीका चूर्ण कर मधुके साथ मिलाकर लेप करना चाहिये । यह कन्याकर लेप है ।

विशेष बात—पित्त शब्दसे किसका पित्त इस बातका श्लोकमें पता नहीं लगता । पित्त-विष है दाह करनेवाला और गर्म है लेपमें गेरनेसे दाह और विषकी सम्भावना है । अतः यहां किसी भी पित्तको गृहण नहीं करना चाहिये । किन्तु यहां पित्ता पाठ शुद्ध है जिसका अर्थ हल्दी है । स्वयं गुप्ता फलं-यहां स्वगुप्तायाः फलं ऐसा पाठ है जिसका अर्थ लज्जालुका बीज । यदि स्वयं गुप्ता का अर्थ कपिकच्छु (कोंच) किया जावे तो तत्तरो स्त्वच उस वृक्षका मूल और त्वचा यह अर्थ नहीं हो सकता । क्योंकि कोंचका वृक्ष नहीं होता है । किन्तु लता होती हैं । इस लिये—स्वगुप्तायाः फलञ्चैव मूलन्तस्या स्तरोस्तुत्वक्” इसका अर्थ-लज्जालूका फल और मूलकी त्वचा लेना चाहिये । शास्त्रके सिद्धान्तसे लज्जालूके जड़की छालकी अपेक्षा नहीं । परन्तु ग्रन्थ कारके लेख और अनु-भव सेमूल गृहण करना चाहिये ।

माजूस्फटी मातुलानी दाड़िमी फलत्वक्शिवा ॥
चूर्णम्भगेद्विपेत्तेन साद्यात्कन्येति निश्चिता ॥१४॥

माजूफल फटकड़ी, विजया, अनारके फलका छिलका छोटी हरड़ समभाग चूर्णकर भगमें लगानेसे निश्चय कन्या होती है ॥१४

नागरस्यच कपोत पुरीषं
कुष्ठमञ्जनवचाहरितालम् ॥
लेपयेच्चमधुसैन्धवयुक्तम्
शोषयेदिति गतामपिरम्भाम् ॥ १५ ॥

इति श्री कुचिमार तन्त्रे कन्याकरणाधिकारे
षष्ठः पटलः ॥

सोठ—कबूतरकी वीठ, कडुवाकूठ काला सुरमा घुडवच-तबकी हरताल सेंधानमक सर्व समभाग चूर्णकर मधु मिलाकर लेप करनेसे स्त्री कन्या हो जाती है। इस प्रयोगसे पानीसे भरे हुए केलेको भी सुखा सकते हैं॥ १५॥

इतिश्री जयपुर राज्यान्तर्गत भामोद ग्राम निवासि हनुत्पुत्रायुर्वेदमहामहोपाध्याय रसायन शास्त्र्यायुर्वेदाचार्य्य भागीरथ स्वामि कृतायां भागीरथी भाषाटीकायां कुचि मारतन्त्रे कन्या करणा धिकारे षष्ठः पटलः।

❋ बन्ध्याकारणम् ❋

सेहुण्ड दुग्धमादाय भालदेशे विलेपयेत् ॥
अपूर्णामथवापूर्णां च्चणाद्गर्भविमुञ्चति ॥ १ ॥
नक्लेशोनापिसम्मोहो न रोगादि भयंक्वचित् ॥
नवा प्रसवदुःखादि नवा हानिविधायकम् ॥ २ ॥

गृहस्थानां सुखकरोयोगोऽयमति दुर्लभः ॥
कुचिमारेण मुनिनाकृपया परिकीर्तितः ॥ ३ ॥

सेहुण्ड (डण्डा थूहर) का दूध लेकर भालदेशे (मस्तकमें) लेप करनेसे पूर्ण अथवा अपूर्ण गर्भ क्षणभरमें गिर जाता है ॥१॥ इससे न तो क्लेश होता है, न वेहोशी होती है न कहींपर रोगादिका भय होता है। न प्रसव कालके समान दुःखादि तथा हानि होती है ॥ २ ॥ यह गृहस्थोंको सुख करने वाला, अत्यन्त कठिन कुचि-मार ऋषिके द्वारा कृपा पूर्वक कहा गया है ॥ ३ ॥

कटुतुम्बीबीजयुतां नीरेण सह पेषयेत् ॥
योनौप्रलेपमात्रेण क्षणाद्गर्भं विमुञ्चति ॥ ४ ॥

बीज सहित कडुवी तोमड़ीको पानीके साथ पीसकर स्मर मंदिरमें लेपमात्र करनेसे क्षण भरमें गर्भ निकल जाता है ॥४॥

वास्तुकस्यतुबीजानि कर्षमात्रं प्रमाणतः ॥
गृहीत्वासेटकार्द्धेन जलेनसहसंपचेत् ॥ ५ ॥
अर्द्धावशेषन्तु पिबेद्गर्भपातोभवेद्ध्रुवम् ॥
अयंयोगो नदेयस्स्याद्दुष्टानांप्रीतयेकदा ॥ ६ ॥

वथुवाके बीज २ तोले लेकर आधा सेर जलमें अवटाकर आधा (१ पाव) शेष (बाको) रहिनेपर पान करनेसे गर्भ पतन हो जाता है ॥ ५--६ ॥

उष्ट्रकराटकमूलंतु उदरे परिलेपयेत्
घोटकस्यच बिष्ठाया धूमाद्गर्भं विमुञ्चति ॥ ७ ॥

ऊँटकठेराके मूलको पीसकर पेटपर लेप करनेसे तथा घोटक (घोड़े) की विष्ठा (लीद) के धूम देनेसे गर्भपात हो जाता है ॥७॥

कर्षमात्रं समादाय सोरंकलमसंज्ञकम ॥
भक्षयेत्पयसासार्द्धं गर्भपातोभवेद्ध्रुवम् ॥८॥

१ तोला कलमी सोरा पीसकर दूधके साथ फाकनेसे गर्भपात होता है ॥ ८ ॥

❋ वन्ध्याकरणम् ❋

सेहुण्डकंसमादाय छायाशुष्कंतुकारयेत् ॥
प्रदाह्यवह्निनातं चकर्षमात्रं हिनित्यशः ॥९॥
एकविंशत्यहान्येतद्भक्षयेन्मधुनासह ॥
आजन्मवन्ध्याभवतिरोग क्लेशविवर्जिता ॥१०॥

सेहुण्ड (डंडा थूहर) के टुकड़ाकर छायामें सुखाकर आग लगाकर काली भस्मकर १ तोला सहितके साथ २१ दिनतक खानेसे आजन्म (सर्वदा) बन्ध्या (वांझ) रहती है ॥१०॥

हस्तिविष्टाजलंग्राह्यं कर्षमात्रं प्रमाणतः ॥
दिनानिसप्तमधुना पिबेद्वन्ध्यात्वसिद्धये ॥ ११ ॥

हाथीकी विष्टाका जल १ तोला लेकर सहित मिलाकर ७ दिन तक वन्ध्यात्वकी सिद्धिके लिये पीना चाहिये ॥ ११ ॥

हारिद्रग्रन्थिमेकैकं प्रत्यहं भक्षयेद्यदि ॥
रजोधर्मसमायुक्ता बन्ध्याषड्भिर्दिनैर्भवेत् ॥१२॥
दिनत्रयंरजोधर्मे त्रिदिनंचततःपरम् ॥
एवंषट्सुदिने श्वेतद्दद्याद्वन्ध्यात्वसिद्धये ॥ १३ ॥

हरिद्राकी एक गाठ प्रत्येक दिन रजोधर्म होनेके समय छे दिनतक खानेसे बन्ध्या होती है ॥१२॥ उसके देनेकी रीति यह है कि रजोधर्मके आरम्भसे तीन दिनतक इसके पश्चात् तीन दिन और देना चाहिये इस प्रकार छे दिनका प्रयोग है ॥ १३ ॥

कालाजीरींच कर्चूरं नागकेशर संयुतम ॥
हरीतकीं कलौजीं च चिपेत्काय फलंतथा ॥१४॥
जलेनभावयेत् कुर्याद्वटिकां बदरोपमाम् ॥
रजोधर्मनिवृत्तौ च भक्षयेत्पयसा समम् ॥ १५ ॥
प्रत्यहं गुटिकामेकामेवं सप्ताह माचरेत् ॥
बन्ध्यात्व प्राप्तये योगोमुनिभिः परिकीर्तितः ॥१६॥

कालाजीरी कचूर नागकेशर छोटी हरड कलौजी कायफल सब समभाग लेकर काजलके समान सूखा महीन पीसकर पीछे जलसे पीसकर बेरके समान गोलीकर ॥ १५ ॥ दूधके साथ एक

गुटिका प्रतिदिन ७ दिनतक खानेसे वन्ध्या स्त्री होती है। यह वन्ध्याकारक योग मुनियोने वर्णन किया है॥ १६॥

त्रैवार्षिकं पलमितं मासार्द्धं भक्षयेद्गुडम्॥
यावज्जीवेद्भवेद्वन्ध्या नात्रकार्या बिचारणा॥ १७॥

तीन वर्षका पुराना गुड़ ४ तोला १५ दिनतक नित्यय खानेसे जबतक जीवन रहे तबतक वन्ध्या रहती है। इसमें सन्देह नहीं है॥ १७॥

सर्षपं तण्डुलं चैवशर्करा सकलं समम्॥
पयसातण्डुलेनै तद्भुक्तं पुष्पं विनाशयेत्॥ १८॥

पीली सरसों चावल शर्करा समभाग लेकर दूध चावलोंके साथ खानेसे स्त्रीका पुष्प नष्ट होता है॥१८॥

तुषतोयेन संक्वाथ्य मूलमग्नितरूद्भवम्॥
पुष्पान्ते त्रिदिनं पीतंबन्ध्यात्वं नयतेध्रुवम्॥१६॥

इतिश्री कुचिमारतन्त्रे बन्ध्यात्व करणा धिकारे सप्तमः पटलः

तुषतोय (जवोकी कांजी) अग्नितरु

(चित्रककी) मूलका काथकर रजोधर्म समाप्त होनेपर तीन दिन पीनेसे वन्ध्यात्व प्राप्त होता है॥१६॥

इतिश्री जयपुरराज्यान्तर्गत भामोद ग्राम निवासि स्वामि हनु-मत्पुत्रायुर्वेदमहामहोपाध्याय रसायन शास्त्र्यायुर्वेदाचार्य्य भागी-

रथ स्वामि विरचितायां भागीरथी भाषाटीकायां कुचिमारतन्त्रे बन्ध्यात्व करणाधिकारे सप्तमः पटल स्समाप्तिङ्गतः ॥

॥ लोमशातनम् ॥

सार्षपंतैलमादाय नागचूर्णंक्षिपेत्ततः ॥
सप्ताहमातपेधृत्वा साधयेल्लोम शातने ॥ १ ॥

सरसोंके तेलमें नागचूर्ण (वत्सनाम) डालकर सात दिनतक घाममें धरनेसे लोमशातन करनेवाला तेल बनता है॥ १ ॥

यहां नाग शब्दसे सीसा गृहण करना या वत्सनाभ विषड़ालना चाहिये यह सन्देह है। पाठक परीक्षा कर सिद्धान्त स्थिर करे। मेरे मनमें वत्सनाभ डालना चाहिये।

शंखभस्मसमादाय सप्ताहंकदलीरसैः ॥
भावयित्वासमंतत्र हरितालंततःक्षिपेत् ॥ २ ॥
लोमापहारकं चैतन्मुनिराजेन कीर्तितम् ॥
अत्रक्रियान्यालुप्ता च तस्मान्नैव भवेद्ध्रुवम् ॥३॥

शंखभस्म लेकर ७ दिनतक केलाकी जड़के रसमें डालकर शंख भस्मकी बराबर तबकी हरताल डालकर सीसीमें धर देना चाहिये ॥२॥ यह लोमोंका नाश करनेवाला प्रयोग कुचिमार मुनिने कहा है, परन्तु इसकी क्रिया और है वह इसमें नहीं लिखी है, किन्तु गुप्त रक्खी है। इससे ठीक नहीं बनता है ॥ ३ ॥

पलाशभस्मतालञ्चरम्भा रसविभावितम् ॥
लेपाल्लोमानि नश्यन्तिस्थानं यातिघृतोपमम् ॥४

ढाककी राख-तवकी या गोबरिया हरतालको लेकर केलेकी जड़के पानीसे भावितकर लेप करनेसे रोम नष्ट होते हैं। वह स्थान-सुन्दर मक्खनकी तरह चिकना हो जाता है ॥ ४ ॥

प्रथमंदूरतः कुर्याल्लोमानितु यथातथा ॥
ततोनुमर्दयेत्तत्रतैलं वररसंज्ञकम् ॥ ५ ॥
वटक्षीरंपुनस्तत्र लेपयेत्सुविचक्षणः ॥
आजन्मतत्रलोमानि नरोहन्तिकदाचन ॥ ६ ॥

प्रथम बालोंको मुड़वाकर पीछे वररसंज्ञक तैलका मर्दन करे। तत्पश्चात् वटके दूधको उस स्थानमें खूब लेप करना चाहिये। इससे जन्मभर बाल नहीं उदय हो सके हैं ॥ ६ ॥

बररसंसक तैलका पता नहीं कौनसा बरर तैल है। ग्रन्थ कारने कुछ लिखा नहीं।

❋ पुंसवनम् ❋

रौप्यकाञ्चन ताम्राणां भस्मक्षौद्र समन्वितम् ॥
पुष्पान्ते त्रिदिनैरेव लीढंक्षेत्रं विशोधयेत् ॥ ७ ॥

चांदी सोना ताम्रकी भस्मको सहित लगाकर स्त्रीके पुष्प होनेके पीछे तीन दिनतक स्त्रीको खाना चाहिये। इससे उसका क्षेत्र शुद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् पुत्र उत्पन्न हो सकता है ॥७॥

नागकेशर चूर्णं च स्नानान्ते त्रिदिनंपिवेत् ॥
पयोसुगभर्तृ संयोगे गर्भंधत्तेततो ध्रुवम् ॥ ८ ॥

नागकेशरके चूर्णको ऋतुमती होनेपर स्नान करनेके पश्चात् जो स्त्री तीन दिनतक दूधसे पीवे और अमृत छोड़नेवाले भर्ताके साथ संयोग होनेपर अवश्य गर्भको धारण करे ॥८॥

अमृतावाजि गन्धार्द्र क्वाथं सप्तदिनं पिवेत् ॥
पतियोग समापन्ना गर्भंसा प्राप्नुयाद्ध्रुवम् ॥६॥

गर्भ धारण करनेकी इच्छा रखनेवाली स्त्री गुडूची असगन्ध अदरख समभाग पीसकर ऋतु स्नानसे निवृत्त होकर सात दिन तक पान कर पतिके साथ संयोग प्राप्त होनेसे गर्भको धारण करती है ॥ ९ ॥

पुष्योध्दृतंलक्ष्मणाया मूलंघृतसमन्वितम् ॥
मासावधिंतु याभुंक्ते गर्भंसालभतेध्रुवम् ॥१०॥

इति श्री कुचिमार तन्त्रे गर्भाधानाधिकारे
अष्टम; पटलः समाप्तः ।

पुष्य नक्षत्रमें उखाड़े हुये लक्ष्मणा बूटीके मूलको घृतमें मिला कर एक मास तक जो स्त्री खावे वह स्त्री अवश्य मेव गर्भ धारण करे ॥ १० ॥

इतिश्री जयपुर राज्यान्तर्गत भामोद ग्राम निवासि हनुमत्पुत्रा युर्वेदमहामहोपाध्याय रसायन शास्त्र्यायुर्वेदाचार्य्य भागीरथ स्वामि विरचितायां कुचिमार तन्त्रे भागीरथी भाषाटीकायां गर्भाधानाधिकारे अष्टमः पटलस्समाप्तिङ्गतः ।

तान्त्रिक पुत्रोत्पत्तिविधिः

सुतार्थे वद्ध चिन्ताना मपुत्राणां मनो भुवाम्।
हिताय मुनिना प्रोक्तन्तद्ब्रवीमि सुतोदयम् ॥१॥

जिन लोगोंका समस्त समय केवल सुरत करनेमें ही व्यतीत हो जाता है। और गृहस्थका असली सुख सन्ततिका प्राप्त होना शेष रह जाता है। जिसके लिये ब्रह्मचर्य्य पालन कर गृहस्थ धर्ममें जाकर देव ऋण पितृ ऋणका उद्धार किया जाता है। वह पूर्ण न होनेसे वंशविच्छेद हो जाता है। इसलिये वंशवृद्धि निमित्त पुत्रोत्पत्तिकाक्रम मन्त्रानुष्ठान द्वारा वर्णन किया जाया है ॥१॥

रज स्नानदिने दत्वा भिक्षुसंघात भोजनम् ॥
शक्तितोदक्षिणांदत्वा प्रार्थयेद्वर मीप्सितम् ॥२॥

स्त्री स्नानादिसे निवृत्त होकर इष्ट देव और श्री सूर्य्यनारायणकी आराधना कर ब्राह्मण साधुओंको भोजन कराकर परमात्मासे पुत्रोत्त्पत्तिकी प्रार्थना करे ॥२॥

तदौषधं पिवेत्कान्ता तारापूजा पुरस्सरम्।
कान्तया सहितो रात्रौ पुत्रार्थी विधिमुच्चरेत् ॥३॥

रात्रिमें अपने पतिके साथ वैठकर तारादेवीका पूजन कर तथा ताराका ध्यानकर लक्ष्मणाके मूलको घोटकर पान करना चाहिये ।३

यदासूर्य्येण मार्गण देहेवहति मारुतः।
सञ्चोद्यनाड़िकां पुत्रींपश्चान्मोहन माचरेत् ॥४॥

पीछे पुरुषके जब सूर्य्य मार्गसे (पिंगला नाडी द्वारा) अर्थात् नाकसे दक्षिणके श्वासके चलनेपर स्त्रीकी पुत्री नामवाली नाडिकामें स्पर्श कर गर्भाधान संस्कार करना चाहिये। उसके एक मास पूर्व श्रीतारा भगवतीका पूजन करना चाहिये। इसके पश्चात् गर्भाधान करना चाहिये ॥४॥

पूजन विधिः ।

करवीरकुसुमैर्दे वीमार्य्यां तारां वरप्रदाम् ।
त्रिसंध्यंपूजयित्वातु मंत्रं सप्तदिनं जपेत् ॥५॥
पञ्चशित्वा परोभूत्वा मासमेकं तथार्चयन् ।
वंशद्योतकरं पुत्रं लभनेनात्रसंशयः ॥६॥

लाल कनेरके पुष्पोंसे तथा लाल चन्दनादिसे तारादेवीका प्रातः मध्याह्न सायङ्काल पूजन करना और ॐ जम्भे मोहय स्वाहा। इस मन्त्रका ७०० नित्य एक मासतक जप करना चाहिए। और पूजाके स्थानमें लक्ष्मणाके कन्दको स्थापन कर नित्य आगे लिखे हुए मन्त्रका जप करना चाहिये ॥५-६॥

उषित्वा लंक्ष्मणामूलं तन्मन्त्राधिष्ठितं पिवेत् ।
सुरभ्या एक वर्णायाः पयसाशवलीकृतम् ॥७॥

उस लक्ष्मणाके मूलको तारादेवीके मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके एक वर्ण वर्णवाली गौके दूधमें मिलाकर पीना चाहिये ॥७॥

तदौषध प्रभावत्वेण शुक्रवृद्धिः प्रजायते।
पिण्डाच्छुक्राधिकात्पुत्रः कन्या रक्ताधिकाद्भवेत्॥८

इस औषधके प्रभावसे वर्य्यकी वृद्धि होती है। और वीर्य्यकी शुद्धि भी होती है। वीर्य्यअधिक होनेसे पुत्र रक्ताधिक्य होनेसे कन्या होती है। दोनों सम होनेसे नपुंसक होता है। विशेष बात यह है कि इस औषधके सेवनसे शुक्र रजकी समता प्रायः नहीं होती है। इस औषधको स्त्री पुरुषोंको एक मासतक ब्रह्मचर्य्य पूर्वक नित्य भक्षण करनेसे अवश्य गर्भ रहता है। स्वेत कण्टकारीका नाम भी लक्ष्मणा हैं, परन्तु यहां लक्ष्मणा मूल (लक्ष्मणा कन्द) का बोधक है। यदि कोई महानुभाव नहीं जानते होंतो हम उनको मंगाकर दे सकते हैं ॥८॥

तीर्थको यदि पुत्रार्थी भूदेवान् भोजयेत्तदा।
दक्षिणां शक्तितोदत्वा विदध्याद्वर याचनम्॥९॥

यदि ब्राह्मणको पुत्रकी अभिलाषा होय तो अनुष्ठान कर ब्राह्मणोंको भोजन कराकर दक्षिणा देकर पुत्रकी याचना करें ॥९॥

फलमूलाशनौभूत्वा पार्वती परमेश्वरौ।
त्रिसन्ध्यं पूजयित्वातु मन्त्र मेतज्जपेत्तदा॥१०॥

और स्त्री पुरुष फलमूल खाकर निर्वाह करे और तीनों काल महादेवजी और पार्वतीजीका पूजन करें और नमो भगवते महेश्व-राय नमः प्रजा जन नायस्वाहा। इस मन्त्रका नित्य जप करे॥१०॥

परदाराभिगमनं मद्यमांसादि भोजनम्।
मिथ्या भिलपनं हास्यं मानं क्रोधश्चवर्जयेत् ॥११॥

पराई स्त्रियोंके पास गमन करना मद्य पीना, मांस खाना, मिथ्या प्रलाप करना, विशेष हँसना, मान करना, क्रोध करना निषेध है ॥११॥

तदास्नात्वा सचैलस्तु सुधौतवसनः कृती।
मन्त्रमेतज्जपेन्नित्यं ननिद्रां समुदाहरेत् ॥१२॥

प्रातः मध्याह्न सायंकालमें सचैल स्नान कर धोयी हुयी धोती पहरकर जप करना चाहिये। जप करते समय नींद नहीं लेना चाहिये। और किसीकी निन्दा नहीं करना चाहिये। क्योंकि किसी पुस्तकमें ननिन्दां यह भी पाठ मिलता है॥ १२॥

हेमतारक ताम्राणि एकीकृत्य सुसर्पिषा।
दातव्यं लेहनं स्त्रीणां क्षेत्रशुद्धिस्तदाभवेत् ॥१३॥

सोना चान्दी ताम्रको मिलाकर एक पात्रमें घृत डाल कर खिलाना चाहिये। इससे स्त्रियोंकी क्षेत्र शुद्धि होती है। यहां सोना चांदी ताम्रकी उत्तम भस्म खिलाना चाहिये। सोना चान्दीके वरखोंतों खिला भी सकते हैं। परन्तु ताम्र कभी कच्चा खिलाना नहीं चाहिये ॥१३॥

येनेदं रचितं सर्वं यस्सर्वान्परिरक्षति।
पायादपायान्नस्स्वामी सर्वसिद्धान्त लक्षणः ॥१४॥

इतिश्री जयपुर राज्यान्तर्गत भामोद्ग्राम निवासि स्वामि हनुमत्पुत्रायुर्वेदमहामहोपाध्याय रसायन शास्त्र्यायुर्वेदाचार्य्य भागीरथ स्वामि विरचितायां भागीरथी भाषाटीकायां सुतोदयनाम प्रकर्णं समाप्तम् ॥१४॥

परिशिष्ट भाग।

आजकल जिस पुरुषको देखिये उसके प्रमेह और जिस स्त्रीको देखिये उसके प्रदर दृष्टिगत होता है। इसलिये साधारणतया कुछ प्रमेहका वर्णन भी कर देना जरूरी है।

प्रमेह वीर्य्य सम्बन्धी रोग है, यह परिश्रम न करनेसे, स्त्रियोंके अधिक विचित्र-विचित्र हाव-भाव आदि वातोंके चिन्तमन करनेसे, प्रत्येक समयमें पलंग पर या गद्दी तकियोंपर पड़े रहकर दिन-रात सोनेसे, अधिक दधि दूध, शराब, मद्य, मांसके सेवनसे, मुर्गोंके अण्डे कछुवा, मछली आदि उत्तेजक जल-जन्तु खानेसे, तवीन अन्नसे, नवीन ग्राम्यजल पानसे, अधिक मिष्ठ पदार्थ खानेसे, अधिक कफ कारक उत्तेजक पदार्थोंके सेवनसे, हस्तमैथुनसे वीर्य्य पतला होकर शरीरके वाहर निकलता है उसीको प्रमेह कहते हैं। इसीसे कमजोरी नपुंसकता मन्दाग्निक्षय आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे प्रायः आजकल नवयुवकोंकी मृत्यु संख्या अधिक दृष्टिगत होती हैं।

वातज, पित्तज, कफज ३ तीन प्रकारके प्रधान प्रमेह हैं। वातज ४ प्रकारका है, पित्तज, ६ प्रकारका कफज १० प्रकार है।

इस प्रकार २० प्रकारके प्रमेह होते हैं। बातज प्रमेहमें १ बसामेह मज्जा मेह, ३ क्षौद्र मेह, ४ हस्ति प्रमेहकी गणना है। इन प्रमेहोंमें वसा (चर्बी) मज्जा लाली लिये हुये पतला पदार्थ) क्षौद्र (सहित) के समान हस्तिके पेशावकी तरह पेशाव आया करता है।

पित्त प्रमेहमेंक्षार प्रमेह (खारके समान) नीलप्रमेहमें (नीले रंगका) कालप्रमेहमें (काले रंगका) हारिद्रप्रमेहमें (पीला) मांजिष्ठ प्रमेहमें मजीठकासा (लाल) रक्त प्रमेहमें (खून) की तरह मूत्रमिश्रित पदार्थ आता है। कफ प्रमेहमें उदक (सफेद स्वच्छ जलकी तरह विशेष) इक्षु (ईखके रसके समान) सान्द्र (कुछ फुटकी दार पदार्थ युक्त) सुरा (मद्यकी तरहका) पिष्ठ (पिट्ठीकी तरह) का शुक्र (वीर्य्य युक्त) सिकता (बालुका युक्त) शीत (गर्मी रहित ठंडा) शनैः (धीरे धीरे) कभी वीर्य्य आना कभी नहीं, आना लाला (कफ-की लारके समान पदार्थ आता है) इन प्रमेहोंमें दश कफके प्रमेह आराम होने लायक हैं,और पित्तजषट् याप्य कठिनतासे आराम होने लायक है। बातज चार प्रकारके असाध्य हैं। क्योंकि इन्हीं चारोंसे मधुमेह, शर्करा मेह मूत्रातिसार हो जाता है। इन उक्त प्रमेहोंका पूर्णतया इलाज न करनेसे शराबिका (दीपकके समान) सर्षपिका (सरसोंके समान) कच्छपिका (कछुवेके समान) जालिनी (जाल-दार) विनता (मोटी नीली पीठया पैरमें होनेवाली) पुत्रिणी (बीचमें बड़ी इधर उधर छोटी फुन्सियोंसे युक्त) मसूरिका (मसु-रके समान) अलजी (बीचमें बड़ी इधर उधर (लालकाली फुन्सियोंसे व्याप्त) विदारिका (विदारी कन्दके समान या आरेसे-

काटनेके समान पीड़ावाली) विद्रधिका (भारी फोड़ेके आकारवाली १० प्रकारकी पिड़िका ये उत्पन्न हो जाती हैं। गांगन (वाघी) उत्पन्न होकर शरीरको कमजोर कर देती है। गुदा हृदय शिर, पीठ अन्य मर्म स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाली पिड़िकायें असाध्य होती हैं।

चिकित्सा।

(१) सबसे प्रथम दो चार दस्त कराकर रोगीको शुद्ध कर प्रमेह आदिकी दवाके प्रयोग करनेमें औषध अच्छा गुण करती हैं।

सौंफ २ तोला काला दाना (कुछ भूनकर) ४ तोला सनाय ४ तोला, काला लवण ३ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, सोठ ३ तोला, कूट छानकर चूर्णकर ३ मासेसे ६ मासेतक गर्म जलसे या गर्म दुग्धसे लेना चाहिये। (२) कोई कोई काला दाना ३ तोला, सनाय ३ तोला, काला नमक १ तोला, मिलाकर ही चूर्ण बनाकर ३ मासेसे ६ मासेतक खाते हैं। इससे एक या दो दस्त खुलकर आजाते हैं। जिन लोगोंके अधिक कब्ज रहता है और प्रमेह भी होता है उनके लिये—

(१) बब्बूलका पंचांग चूर्ण ऽ। शर्करा एकपाव आधपाव इमली-के बीजोंका चूर्ण मिलाकर १ तोला शीतलजलसे या कच्चे दुग्धसे दोनों समय लेना चाहिये। इससे प्रमेह तथा सूजाक भी आराम हो जाता है।

(२) महुआके भीतरकी छालका चूर्ण ६ मासे काली मिर्च ७ घोटकर नित्य पीना चाहिये। इससे भी प्रमेह मिटता है। (३) त्रिफला चूर्ण ६ मासे मधु १ तोलामें मिलाकर दोनों समय खाकर

थोड़ासा दुग्ध पान करना चाहिये। यह प्रमेहकी उत्तम दवाई है।

(४) हरिद्राचूर्ण ३ मासे आमला चूर्ण ६ मासे मधु १ तोलामें मिलाकर खाना चाहिये+ यह भी परीक्षित है (५) २ तोला गुड़ूचीके चूर्णको पीसकर छाणकर १ तोला मधु मिलाकर नित्य पीना चाहिये। यह भी अनेक वार परीक्षित हैं (६) हरड़ छोटी २ तोला वहेड़ाकी वकली ४ तोला आंवला शुद्ध ८ तोला—चूर्णकर उसमें—शिलाजीत ४ तोला प्रवाल पिष्टी १ तोला गेरकर १५० गोली वनाकर रख लो। उसमेंसे १ प्रातः एक सायङ्काल शीतलजलसे या दुग्धसे सेवन करना चाहिये।

(७) अथवा—छोटी इलाइची संखपुष्पी मिश्री समान भाग-लेकर चूर्णकर खाना चाहिये। अथवा हमारा प्रमेह शार्दूल रसायन कल्पतरु वटीका सेवन करना चाहिये। यदि और विशेष औषधियां देखनेकी इच्छा होय तो शार्ङ्गधर भावप्रकाश आदि ग्रंथ देखना चाहिये। चन्द्र प्रभावटी गोक्षुरादि गुग्गुल वंङ्गभस्म आदि आदि वैद्यकी सलाहसे खाना चाहिये।

(सूजाक और गर्मी)

इसी प्रकार—आजकल रंडीबाजीके कारण सूजाक तथा गर्मी-का रोग भी वहुत होता है। इसीलिय सूजाक और गर्मीकी अत्युत्तम औषधि लिखी जाती है।

प्रवाल पिष्टी (सूंगा गुलाबमें घुटा हुआ) ४ रत्ती मधु १ तोलामें मिलाकर चाटकर ऊपरसे शंखपुष्पी (शंखाहूली)१ तोलाको पीसकर ५ काली मिर्च मिलाकर ऊपरसे पान कर लेना चाहिये।

यह सूजाककी अद्भुत दवाई है, परन्तु धैर्य्य करनेकी तथा पथ्यसे रहनेकी विशेष अपेक्षा है।

अथवा बिरेजाका तेल १ तोला सन्दल तेल बढ़िया १ तोला दालचीनीका तेल ६ मासा शीतल चीनीका तेल ६ मासे मिलाकर सीसीमें रख लेना चाहिये। मात्रा २० बून्द बतासेमें या शर्करामें रख लेकर ऊपरसे २ तोला बड़े गोखरूका काढ़ा पीना चाहिये। अथवा कभी न चूकनेवाला भागीरथ स्वामीको सूजाकयमका सेवन करना चाहिये।

गर्मीकी दवाई।

भृंगराज ५ तोला काले फूलका कालीमिर्च २ तोला घोटकर जंगली बेरके बराबर गोली बनाकर २ गोली प्रातः २ गोली-शामको जलसे खाना चहिये।

स्वर्ण दुग्धा-(सत्यानासी) की ८ अंगुलका टुकड़ा-काली मिर्च ११ घोटकर नित्य पीना और दूध चावल घृत खाना चाहिये अन्य सब वस्तुका त्याग है।

मुहासोंकी दवाई।

पीली सरसों ३ मासे दूधमें खूब पिसवाकर १ मासा कपूर गेरकर मुखपर नित्य रगड़नेसे मुहासे नहीं होंगे, और मुहासोंके दाग भी जाते रहते हैं।

आजकलकी नपुंसकता।

आजकलकी नपुंसकताके अनेक कारणोंमें हस्तमैथुन प्रधान-कारण है। इससे शरीर कमजोर चेहरेकी निर्बलता अरुणता रहित चेहरा होता है। स्वभावकी खराबी चिड़चिड़ापन दीनता आ

जाती है। आंखें बैठ जाती है। मुख लम्बायमान प्रभा रहित सफेद नीचेकी ओर दृष्टियुक्त भयभीतसा मनुष्य रहता है। दिल और मस्तिष्ककी शक्ति इन्द्रियोंकी शक्ति नष्ट हो जाती है। अधिक निद्रा आना या निद्रा बिलकुल न आना अधिक और बुरे स्वप्न आवा नसोंका अधिक सुकड़ना शरीर ढीला पड़ना आदि लक्षण होते हैं। इसीसे मृगी उन्माद रोग हो ज़ाता है। स्मरणशक्ति वाक्शक्ति व्याख्यान शक्ति और उहा पोह करनेवाली बुद्धि नष्ट हो जाती है। भ्रम मनकी चञ्चलता वार वार पेशाव आना कभी कभी पीडा होना लिङ्गेन्द्रियलाल रहना वार वार इच्छा करते ही वीर्य्यपात होना या स्वप्नमें वीर्य्यपात होना, अण्डकोशोंमें गुरुता पेटमें बुद्-बुद् होना, चक्कर आना वाल सफेद होना। शरीरपर काले दाग पड़ जाना रक्त खराव होना शिरके वाल गिरने लगना गंज होना प्रधान चिह्न है।

पृष्ठवंशमें पीड़ा रहना विना सहारे वैठना कठिन हो जाता है। इसी प्रकार स्त्रीयोंकी दुर्दशा हो जाती हैं। स्त्रियोंको योनि और पुरुषोंके शिश्नसे वीर्य्य इच्छा होते ही वहने लगता है। पुरुष की जननेन्द्री वांकी टेढ़ी हो जाती हैं। तथा प्रायः शिथिल हो जाती हैं। यही सब लक्षण गुदा भंजन करने करानेवालेके भी होते हैं। और वह पुरुष नाममात्र स्त्रियोंके कामका नहीं रहता। यानी नपुंसक हो जाता है। इस रोगसे सैकड़े पीछे ६० पुरूष नपुंसक हो रहे हैं। इसी प्रकार अंगुली प्रवेश कर अपने रज़को नष्ट करनेके कारण १००में ६८ स्त्रियां प्रदररोगवती बनकर यमपुर जाती

हैं। और विशेषकर क्षयरोगका भी यही कारण है। शास्त्रोंमें मानसिक क्लैव्य पित्तज क्लैव्य-वीर्य्य जन्य क्लैव्य—रोगजन्य क्लैव्य-शिराच्छेद जन्य क्लैव्य-शुक्रस्तम्भ जन्य, क्लैव्य सहज क्लैव्य नामसे सात प्रकारके नपुंसक होते हैं। किसी भयशोक आदि के कारण स्वभाव बिगड़नेके कारण मन नहीं चलता है चित्तम भ्रम हो जाता है वह मानसिक नपुंसकता है।

पित्तज क्लीवता-अधिक चरपरे खट्टे क्षारयुक्त पदार्थों के अधिक सेवनसे बहुत दिनोंतक अफीम खानेसे कच्ची भस्म कुचला आदि नशीले पदार्थ खानेसे मद्य पीनेसे गर्मीके कारण वीर्य्य पतला पड़ कर क्षरण होकर नपुंसकता होती हैं। वीर्य्य जन्य क्लीवता अधिक मैथुनसे शरीरमें वीर्य्यके अभाव होनेसे हो जाती है। लिङ्गेन्द्रियमें किसी रोगके होनेसे या अन्य रोगोंके कारण भी नपुंसकता होती है वह रोगजन्य नपुंसकता होती है। किसी कारण वश किसी रक्तविकार आदिमें शिराच्छेद .कर रक्त निकालने पर भी किसी वीर्य्य बाहिनी शिराओंपर प्रभाव पड़कर नपुंसकता होती है। वह शिराच्छेद जन्य नपुंसकता होती है। अधिक ब्रह्मचर्य्य रहनेसे अपेक्षित समयपर स्त्री संगम न करनेसे नपुंसकता होती है। वह शुक्रस्तम्भकरी क्लीवता कहाती है। माता पिताके रजोवीर्य्य के दोषसे जन्मसे भी नपुंसकता होती है वह सहज नपुंसकता होती है। इसी सहज क्लीवके असेक्य,ईर्ष्यक कुम्भिक-महाषंड,सौगन्धिक नामसे ५ भेद हैं महर्षिचरकने-वीजोपघात ध्वजभंग जरा सम्भव वीर्य्यक्षयक्लीवके नामसे चार प्रकारके नपुंसकोंका नर्णन किया है।

चिकित्सा ।

हस्त मैथुनसे उत्पन्न हुई नपुंसकताका इलाज कठिन है—यह सहसा ठीक नहीं होता है । जब तक योग्य चिकित्सक और रोगी भी योग्य नहीं होते हैं । सबसे प्रथम हाथी दांतका चूरा और एरण्डकी मिगीसे लेककर पीछे पतली एक कोमल लकड़ी लगाकर बांधना चाहिये । इससे टेढ़ापन दूर होकेने पश्चात् सफेद कनेरके जड़की छाल ऽ॥ हरताल तबकी ऽ—संखिया १ तो०कुचला ऽ— शृंगिया विष २॥ तो० आकका दूध ऽ।—भैंसका दूध ऽ३ लेकर रख लेना ।

कनेरकी छाल-कुचला-दिकसब पदार्थ दरदरे कूटकर पोटलीमें बांधकर दूधमें समान भाग जल मिलाकर चूल्हेपर चढ़ाकर मन्दाग्नि से काथकर दूध मात्र शेष रखकर उसका दही जमाकर घृत निकाल कर रख लेना चाहिये । इस घृतका ध्वजामें नित्य लगाना । बीचमें एक दो दिन पलाण्डु) प्याज) या लहसनके कल्ककी पट्टी बांधना चाहिये—और पलास रसायनका प्रयोग करनेसे हस्त मैथुनकी नपुंसकता आराम होती है ।

पलाश-रसायन

पलाशकी जड़की भीतरकी लाल छाल ऽ५ जल एक मन शेष दस सेरकर उसमें ऽ२ गेहूं गेरकर मन्दाग्निसे पकाकर जल सुखा कर चून पीसकर रख लेना चाहिये । १ तोला चूनको २॥ तोला घृतमें :सेककर २ तोला मिश्रीका गर्म जल देकर हलुवा बनाकर खिलाना चाहिये । इस प्रकार १ तोला नित्य वढ़ाना आध पाव

चून तकका यदि खा सकैं तो बढ़ाकर खिलना चाहिये। अन्यथा जितना बढ़ सके प्रकृत्यनुसार बढ़ाना चाहिये। यह चिकित्सा मेरी अनुभूत है–यदि यह घृत किसीसे नहीं बन सके तो–नपुंसत्वारि घृत नपुंकत्वारि तिलाके नामसे हमारे यहांसे लेकर इस्तेमाल मनुष्य कर सकता है। समय मिलनेपर पलाश रसायन भी बनाकर भेज सकते हैं।

मानसिक क्लीवतामें–वहिम दूर करना चाहिये और हंसी दिल्लगी करना वैश्यादिका नृत्य देखना–नाटक देखना जिनसे मन अधिक प्रसन्न हो जावे।

पित्तज नपुंसकतामै-विदारी कंदमें विदारी कंदकी भावना देकर उसमें समभाग अश्वगन्धा चूर्ण मिलाकर दोनोंके समान भाग मिश्री मिलकर १ तोला चूर्ण धारोष्ण दूधसे खाना चाहिये। या विदारीकंद गोक्षुर चूर्ण समभागमें समभाग मिश्री मिलाकर शीतल जलसे खाना चाहिये या-आमलक रसायन खाना चाहिये। अथवा स्वामी रसायनका सेवन करना चाहिये। स्वामी रसायन हमारे यहांसे मिलती है।

वीर्य्यजन्य क्लैव्यमें-उड़दकी दालकी खीर-उड़दके लड्डू असगन्धपाक–मूसलीपाक–मुसलीका मुरब्बा गोक्षुरपाक शतावरीपाक खाना चाहिये।

रोगजन्य नपुंसकतामें—रोग और उसके नष्ट करनेवाली औषधियोंका विचार करना चाहिये कि उन औषधियोंसे कहीं नपुंसकता तो नहीं होती उसके अनुसार चिकित्सा करना चाहिये।

शुक्रस्तम्भसे उत्पन्न नपुंसकताके नाशके लिये सितार तम्बूरा सारंगी तबला पखावज आदि बाजोंके सुननेके साथ साथ बढ़िया मीठा गान सुनना स्त्रियोंकी बातें सुनकर ध्यान न देना। खूबसूरत स्त्रियोंको अवलोक न करना—उनसे हंसना-बोलना-चुम्बनहास्य करना रसीली पुस्तकें पढ़ना चाहिये।

सूचना—इन सब बातोंको करते हुवे अपनेको भ्रष्ट होनेसे बचाना। यह सब बातें घरकी सतीसेही करना उत्तम है।

सहज नपुंसक असाध्य है परन्तु अधि नपुंसककी आदत खराब होनेके कारण दूसरे पुरुषसे अपने मुखमें ध्वजा रखकर चूसकर वीर्य्यपान करनेके कारण पुरुष बन जाता है।

ईर्ष्यक नपुंसक दूसरेको संगम करते देखकर पुरुष बनता है।

कुम्भिक नपुंसककी बुरी आदत होती है। वह अपनी गुदामें बिना वीर्य्यपात कराये स्त्रीसे मैथुन नहीं कर सकता। जब स्त्रीसे मैथुन करना होगा तब पूर्व गुदामें वीर्यपात कराकर स्त्रीके पास जा सकता है। किसीके मतमें यह गुदाभंजानेयोंके होता है। जब गुदा भंजनके लिये तैय्यार होता है तब स्त्रियोंसे कुछ रमणकर सकता है। ऐसोंका कुछ इलाज नहीं केवल नर्क भोग ही है।

यहां खंड नपुंसक-अपने ऊपर स्त्रिको चढ़ाकर संगन करनेपर गर्भ रहिनेसे पैदा होता है। उसको सब चेष्टायें स्त्रीके समान होती हैं। वह भी स्त्रीकी तरह सोकर नपुंसक होनेपर स्त्रियोंसे रमण कराता है। या पुरुषोंसे वीर्य्यपात कराता है। सौगन्धिक नपुंसक दुष्ट योनिमें पैदा होकर बनता है। वह दूसरोंका ध्वजा

योनिको जबतक खूब नहीं चूसता तबतक स्त्रीसे संगम नहीं कर सकता है। जरा सम्भव नपुंसक बुढ़ापेसे होता है उसका इलाज भगवान का भजन करना ही ठीक है। अथवा पारद भस्म दरद भस्म मिलानेसे युवा हो सकता है।

स्त्री और पुरुषोंके उपयोगी-बृंहण-लेपन वश्य-बन्धन-वृश्यक-केशकृष्णता (केशकल्प) वन्ध्या-करण-प्रसव चिन्तन अथवा कन्या करण प्रसवकरण-पादलेप अञ्जन तैल रोमनाशन आदि पूर्व वर्णित होनेके कारण लिखनेकी अपेक्षा नहीं है।

प्रदर

अत्यन्त विरुद्ध मद्यपान या संयोगादि विरुद्ध मद्यपान प्रकृतिविरुद्ध दूषित भोजन, अध्यषण (भोजनपर भोजन) अजीर्ण, गर्भपतन, अत्यन्त मैथुन घोड़ा ऊंट-हस्ति आदि हलनेवाली सवारीपर चढ़ना-विशेष दौड़ना, अत्यन्त लंघन करनेसे क्षीण धातुता, अत्यन्त चिन्ता करना—अत्यन्त बोझा उठाना, किसी चोटका लगना-अत्यन्त ऊपर नीचे चढ़ना-दिनमें सोना-अप्राकृतिक पशुवत् मैथुन आदिके कारण बात पित्त कफ द्वंद्वज सन्निपात भेदसे स्त्रियोंके योनि मार्गसे लाल पीला आदि लक्षण युक्त निरन्तर रजस्राव होनेको प्रदर या असृगदुर, पानी पड़ना, कहते हैं। इससे शरीरमें पीड़ा रहना-शरीरका टूटते रहना साधारण बात है जब इसकी अत्यन्त प्रवृत्ति हो जाती हैं तब दुर्वलता शिरमें चक्कर आना, बेहोशी-मद-प्रलाप—प्यास शरीरमें दाह-शरीरका पीलापन-हर

वक्त आलस्य हाथ पैर तथा अन्य शरीरका ऐठना कंपना आदि कुछ लक्षण (अपतन्त्रक हिष्टिरिया) के समान होने लगते हैं।

वातज प्रदरमेंकुछ लाल वर्णयुक्त मांसके पानीके तुल्य थोड़ा थोड़ा फेणयुक्त रजका स्राव होता है। पित्तज प्रदरमें पीला नीला कुछ काले रंगयुक्त-चिमचिमाहट पीड़ायुक्त गर्मवारवारस्राव होता है। कफज प्रदरमें चावलोंके मांड़के तुल्य शाल्मलीके गोंदके समान चिप चिप करनेवाला छिछिड़ेयुक्त कुछ सफेद पीतवर्णयुक्त अथवा मांसके धोवनके सदृश रजस्स्राव होता है। त्रिदोषमें सहित-घृत-हरितालके समान वर्ण वाला मज्जाके समान कुछ लालीयुक्त मुर्देकी समान दुर्गन्धयुक्त-रजस्स्राव होता है। यह असाध्य है इसकी चिकित्सा वैद्यको नहीं करना चाहिये। यदि निरन्तर स्राव होने लगें पिपासा दाह ज्वर अधिक हो रक्त क्षीण हो गया हो और दुर्वल हो तो असाध्य समझना चाहिये।

शुद्धऋतु

जो मासिक ऋतु न अत्यन्त विशेष हो न अत्यन्त अल्प हो शशके, रक्तके तुल्य पतला लाल अथवा लाखके रंगका हो कपड़े में लगापर धोनेसे कपड़ासे शीघ्र छूटनेवाला हो वह शुद्ध ऋतु होता है अथवा वीरवहूटीके तुल्य लाल स्निग्ध मदके समान गन्ध वाला पतला छिछड़े रहित गर्म हो और कपड़ेमें लगनेपर धोते ही छूटने वाला शुद्ध ऋतु होता है!

प्रदर चिकित्सा।

१—वात प्रदरमें सांचर लवण सफेदजीरा मुलहटी हरी मिंगी

निकाले हुवे शुद्ध कमल गट्टा, प्रत्येक छे छै मासे ग्रहण कर। ३२ तोला जलमें भिगोकर काथ कर चतुर्थांश शेष रखकर १ तोला असली मधु डालकर दोनों वखत पीना चाहिये।

२—पित्त प्रदरमें मुरहटी-मिश्री २ तोला मिलाकर क्वाथ कर पीना चाहिये।

३—समस्त दोषज प्रदरमें-रसोत बढ़िया ६ मासा चौलाईकी जड़का स्वरस १ तोला मधु २ तोलामें मिलाकर सवेरे और सन्ध्याको चाटना चाहिये।

४—अशोककी छाल १ तोला अनन्तमूल ६ मासा-जल २४ तोलामें रात्रिको भिगोकर प्रातः क्वाथकर पीना चाहिये। इससे सब प्रकारका प्रदर तथा प्रमेह मिट जाता है।

५—अथवा अशोककी छाल ऽ१ अनन्तमूल ऽ१ धायके फूल ऽ। सुपारीका चूर्ण ऽ= सेमलका मूसला ऽ। जल ऽ१५ रखकर गुड़ ऽ३ गेरकर १ मास तक भूमिमें गाड़कर पीछे छाणकर २ तोला जल ५ तोलामें मिलाकर पीना चाहिये। यह प्रदरकी शर्तिया औषधि है।

६—अथवा उक्त औषधियोंमें ऽ१० जल डालकर ।≈ गुड़ गेरकर ४ दिन भिगोकर अर्क निकाल कर शीशीमें धर लेना चाहिये प्रत्येक समय दिनमें २ बार मिश्री मिलाकर ५ तोला पीना चाहिये।

७—इमलीके बीजोंका चूर्ण ।। चुनयां गोंद ।= माजू फलका चूर्ण ।- सुपारीका चूर्ण ।- पठाणी लोध ।=। सबके समान मिश्री मिलाकर ६ मासा जलके साथ खाना चाहिये।

८—खरहिटीके १ तोला पत्ता पीसकर ५ तोला मिश्री गेरकर पीना चाहिये।

९—अथवा प्रदर दारिणी औधाह्लली और कुरंड समभाग चूर्णकर दोनोंके तुल्य मिश्री मिलाकर शीतल जलसे या कच्चे दूधसे खाना चाहिये।

१०—एक बूंटी बिल्वपत्रके समान आकार वाली वल्ली जिसके कांटे सब शरीर तथा कपड़ोंमें लग जाते हैं उसको घोटकर पीना चाहिये। यह बूंटी प्रदरके लिये रामवाण है।

११—आंवलेके स्वरससे आंवलोंमें भावना देकर खानेसे प्रदर मात्र मिटता है।

१२—अश्वगन्धा-मा- ३ घोट कर छान कर शक्कर मिला कर पीना चाहिये।

विशेष—अपेक्षा हो तो हमारी सर्वोत्तम प्रदरारि दवा मंगाकर खाना चाहिये।

और भी अनेक प्रकारकी प्रदरकी दवाइयां हैं वह किसी वैद्यसे पूछकर कर दे सकते हैं।

ऋतुधर्म।

ऋतुधर्म ठीक न होनेके लिये काले तिल-१ तोला-गुड़ पुराना २ तोला काली मिर्चं नग ११ पीपल नग ३ भारंगोंकी छाल ६ मासेका क्वाथकर पीना चाहिये।

विशेष बात—जो स्त्रियां कपड़े आदिके यन्त्रोंसे अप्राकृतिक

मैथुन कर प्रदर रोगको अपने शरीमें वसाती है। उनका अच्छा होना अत्यन्त कठिन है।

योनिके २० बीस रोग और परीक्षा

वातादि दोषोंके द्वारा दुष्ट ऋतुके कारण—मिथ्या आचरणके कारण माता पिताके वीर्य्य तथा दोषके कारण—कुछ दैवी प्रकोपके कारण स्त्रियोंके योनिमें वीस प्रकारके रोग होते हैं।

विंशति व्यापदोयोनौ निर्दिष्टा रोगसंग्रहे। मिथ्या चारेणवै स्त्रीणां प्रदुष्टेनार्तवेनच। जायन्ते वीजदोषाच्च, दैवाच्च सुश्रृणुतान् पृथक् ॥

जिसमें फेन आते हों ऊपरसे चोडी सपाट वनी हुई अत्यन्त क्लिष्टतासे रजको वाहर निकालने वाली और कफके विकारसे वनी हुयी उदावर्त्ता, (उदावृत्त) नष्ट पुष्प वाली वन्ध्या योनि, नित्य पीड़ा रहनेवाली विप्लुता, मैथुन करनेके प्रत्येक समय पीड़ा हो वह परिप्लुता जो वहुत कर्कश हो स्थिर रहनेवाली चीर डालनेके समान पीड़ा वाली वातलायोनि होती है। जिससे दाह सहित रक्त निकले वह लोहितक्षया। जो वायुके द्वारा अपने रजयुक्त पुरुषके शुद्ध वीर्य्यको भी वमनकर देवे (निकाल देवे) वह वामिनी। जो मैथुनमें संगम होते ही स्थानसे भ्रष्ट हो जावे वह प्रस्रंसिनी। जो जरा छेड़ते ही गर्भ धारणकर दुःखसे सन्तति पैदा करे वह दुष्प्रजायिनी है। जो गर्भ धारण करतेही रक्तका सम्यक् प्रकारसे क्षयकर स्थित गर्भको नष्ट कर देवे (वह पुत्रघ्नी)

जिसके छेड़ते ही दाह पाक-ज्वर हो जावे वह पित्तालायोनि है + कफ प्रकृतिवाली अति मैथुन करनेपर प्रसन्न न होनेवाली अत्यानन्दा, जिसमें विशेष कर्णिकायां हों वह कर्णिका, जो मैथुन समय पुरुषसे पूर्वरज स्राव करती है और पुरुषके वीर्य्यको धारण नहीं कर सकती है वह मैथुनाचरणा। अत्यन्त मैथुन करनेसे क्षरण होनेवाली अति चरणा योनि होती है अति चरणा और अचरणा वीर्य्यको नहीं धारण करती है। जिस योनिमें छिछड़ेदार कफ निकलें खाज वहुत चले और शीतल होय वह श्लेष्मलायोनि होती है। सन्निपात दोषसे उत्पन्न होनेवाली योनि रजसे शून्य होती है। तथा स्तनोंसे शून्य होती है। मैथुनमेंखरस्पर्शा होती है। वह षण्डीयोनि होती है। जो अत्यन्त पराक्रमी पुरुषके द्वारा ग्रहण करने योग्य सहसा स्राव न होनेवाली अण्डलीयोनि होती है। जो आकारमें वहुत वड़ी होती है वह महायोनि होति है। अत्यन्त छोटी छोटे आकार वाली सूचीवक्तायोनि होती है। समस्त चिन्होंसे युक्त सन्निपात लक्षण वाली ५ प्रकारकी योनि होती हैं। वह सबके योग्य नहीं होती है।

दिनमें सोनेसे अत्यन्त क्रोधसे अधिक व्यायामसे अत्यन्त मैथुनसे घावसे। नखन्तादि स्तनोंसे वातादि कुपित होकर पीप रक्त मिली हुई आभायुक्त पिस्तोंके समान योनिमें कन्द उत्पन्न होते है। वह योनि कन्द रोग होते हैं। वह नीले अतसीके रंगवाले लाल वर्णवाले कण्डु युक्त व्रण होते हैं।

योनि रोगोंमें स्नेह वस्तिकर्म अभ्यङ्ग परिषेक प्रलेप-पिचु कुम्भीस्वेद आदि कार्य्य करना चहिये।

॥ इति ॥

वैद्यक ग्रंथ।

वाग्भट मूल १॥)
„ भा० टी० सूत्रस्थान ३)
„ „ „ सम्पूर्ण १०)
„ सटीक ८)
अमृत सागर रफ ३)
„ „ ग्लेज ३॥)
अर्क प्रकाश भा० टी० १॥)
अनुपान दर्पन भा० टीका १)
इलाजुल्गुर्वा २)
चक्रदत्त भा० टीका ४)
„ „ लाहोर ६)
„ सटीक „ ५)
चरकसहिता पं० रामप्रसाद कृत भाषा टीका सहित २०)
जर्राही प्रकाश १॥)
तिव्वे अकवर भाषा ७)
डाक्टरी चिकित्सार्णव २)
नपुंसका मृतार्णव १।)
भाव प्रकाश भा० टी० १२)
सालिग्राम निघंटुभूषण १०)
योग चिन्तामणि भा० टी० २)
रसायन सार ६)

रस रत्नाकर भा० टी० ८)
रसराज सुन्दर ३।)
वंगसेन भा० टी० १२)
वैद्यक रसराज महोपधि प्रत्येक भाग १।)
चारो भाग ४॥)
पांचो भाग ५॥)
शर्ङ्गधर संहिता भा० टी० ४)
„ „ सं० टी० ५)
„ „ मूल १)
माधव निदान भा० टी० ३)
„ „ संस्कृत टीका मधुकोष २।)
„ „ मधुकोष आतंक दर्पण ५)
सुश्रुतसंहिता सम्पूर्ण भा० टी० १८॥)
सुश्रुतसंतिता संपूर्ण मथुरा १०)
पारद संहिता भा० टी० १२)
वन्ध्या कल्प द्रुम भा० टी० १२)
रसेन्द्र सार संग्रह भा० टी० ४)
भाव प्रकाश मूल ५)

❁ काम विज्ञान भाषा ❁

आज कल बाजारमें कोकशास्त्रके :नामसे खूब लूट हो रही है लोगोंके हाथमें कोकशास्त्रके नामसे जो पुस्तकें पहुंचती हैं वे सार हीन गन्दी और कुमार्गकी ओर ले जानेवाली होती हैं, :इस अभावको दूर करनेके लिये वात्स्यान मुनि कृत कामसूत्र, कोका पण्डितके कोकशास्त्र किंवा रति रहस्य या रतिशास्त्र पञ्चसायक आदि संस्कृत और अन्यान्य भाषाओंकी अनेकानेक पुस्तकोंके सहारे इस इस ग्रन्थको लिखा गया है, इस पुस्तकको कामशास्त्र का निचोड़ कहना चाहिये इसमें ३० अध्याय और पूरे ५०० पृष्ठ हैं; बहुत ही मोटे एन्टीग कागज पर छापी गई है, मूल्य केवल ३)

श्री सत्यनारायणकी कथा

यह पुस्तक आयुर्वेद महामहोपाध्याय रसायनशास्त्री भागीरथ स्वामीद्वारा भारत भारतीकी भांति खड़ी बोलीकी कवितामें लिखी गयी है। इसमें जो आजतक किसी पुस्तकमें नहीं लिखे हैं वह प्रत्येक अध्यायके भाव भिन्न भिन्न वर्णन किये हैं। यदि पढ़ने-वाला चाहे तो अनेक रागोंमें गा सकता है। जिसके पढ़नेसे स्त्री-पुरुषोंको पूर्णतासे :गृहस्थ धर्म और पतिव्रतात्व आदि धर्मोंकी पूर्ण शिक्षा तथा श्रीसत्यनारायण स्वामीकी पूर्ण भक्ति प्राप्त हो सकती है। इसकी प्रशंसा :अनेक पत्रोंने मुक्तकण्ठसे की है। दाम ॥) ।)

मिलनेका पता :—

श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस पुस्तक एजेन्सी,

नं० १६५।२ हरीसन रोड, कलकत्ता।

सब प्रकारकी संस्कृत-हिन्दी पुस्तकोंके
मिलनेका पता—
श्रीवेंकटेश्वर पुस्तक एजेन्सी,
१९५।२, हरिसन रोड,
कलकत्ता ।